नवम्बर, 1983 ज्ञानामृत
वर्ष 19 ❋ अंक 5 मूल्य 1.35

सतयुग के प्रथम विश्वमहाराजन श्री नारायण तथा विश्व महारानी श्री लक्ष्मी के स्वयंवर के पश्चात् राज्याभिषेक की मधुर स्मृति में ही प्रति वर्ष दीपावली का पर्व मनाया जाता है।

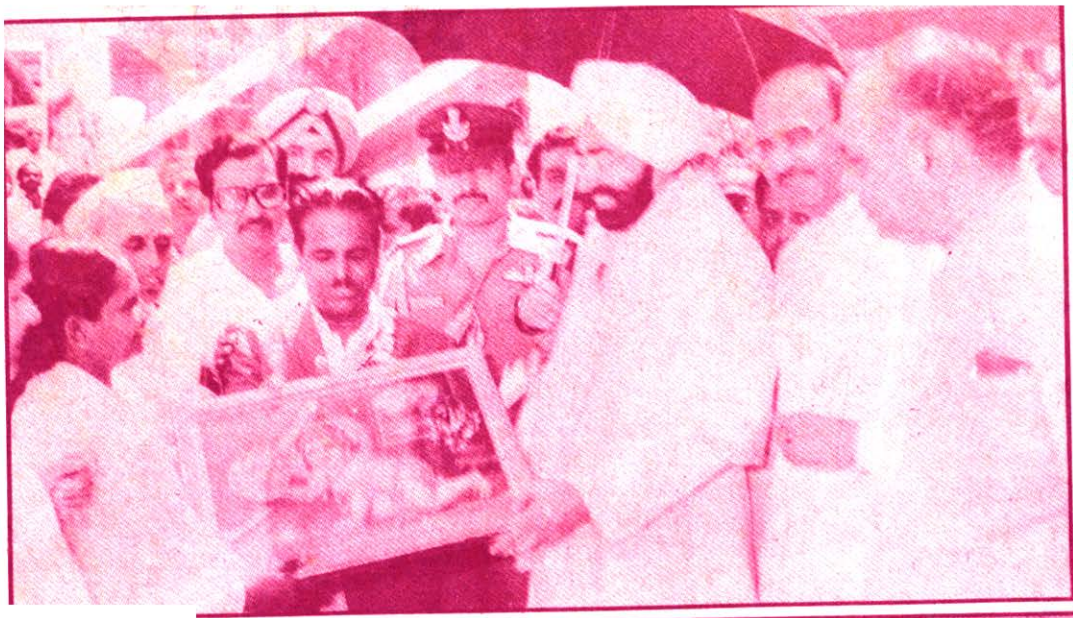

पंढरपुर में भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जी के पधारने पर ब्र.कु. सोमप्रभा ईश्वरीय सन्देश देने के पश्चात उन्हें श्रीकृष्ण का सुन्दर चित्र भेंट करते हुए

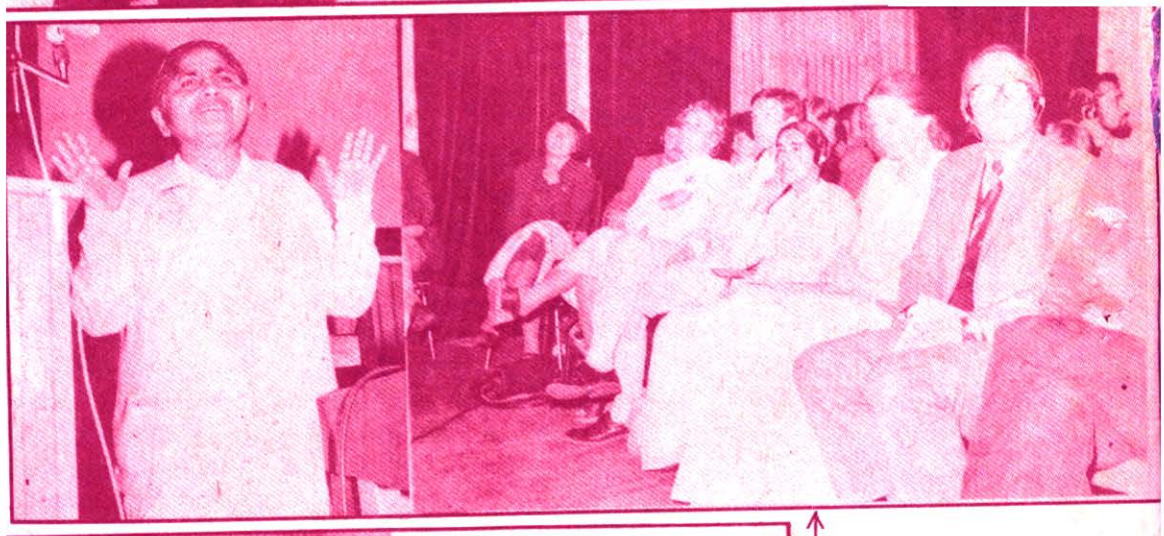

पोलैन्ड की राजधानी वारसा में ब्र.कु. जानकी तथा जयन्ती ने 'बायोएनर्जी थेरापी सेमीनार' में भाग लिया। दादी जानकी जी सम्बोधन करते हुए

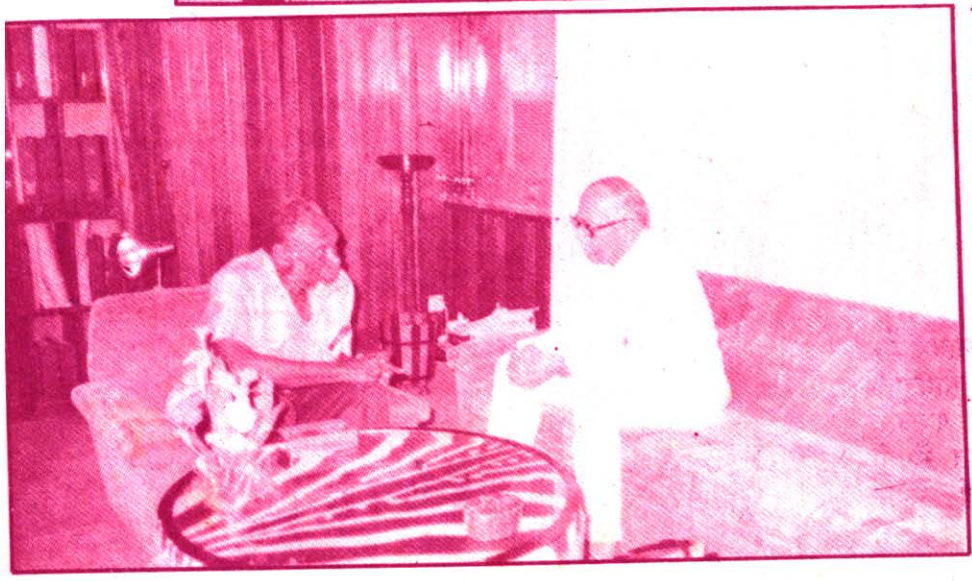

गयाना के प्रधान मन्त्री को ईश्वरीय सन्देश देते हुए ज्ञानामृत के मुख्य सम्पादक भ्राता ब्र.कु. जगदीश चन्द्र जी।

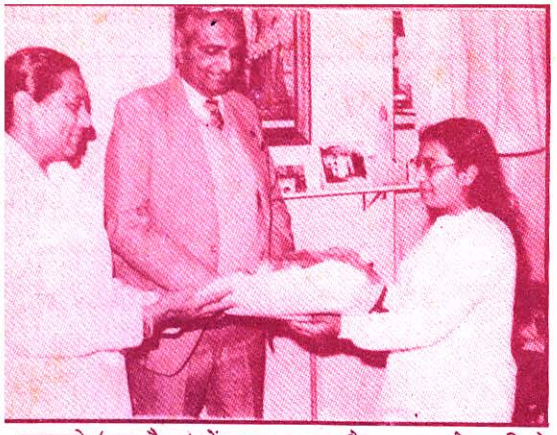

हनसलो (इन्गलैन्ड) में ब्र.कु. ऊषा और भ्राता रमेश जी के पधारने पर ब्र.कु. हंसा उन का स्वागत करते हुए।

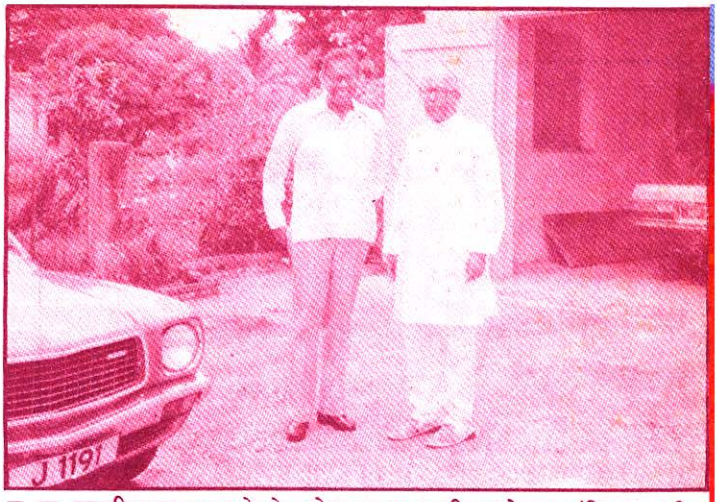

ब्र. कु. जगदीश चन्द्र बारबेडोज़ के मुख्य न्यायाधीश को आबू 'विश्व शान्ति सम्मेलन' के लिये निमन्त्रण देने के पश्चात उन के साथ खड़े हैं।

सांगली में गणेश उत्सव के उद्घाटन के अवसर पर भाषण देते हुए भ्राता शिवाजीराव देशमुख, गृह राज्य मन्त्री, महाराष्ट्र

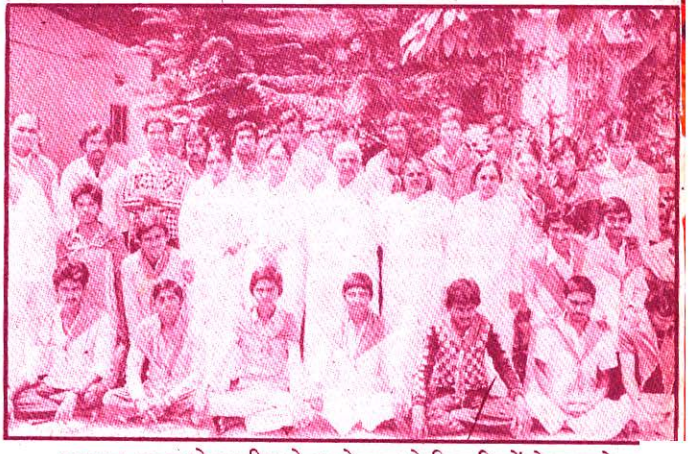

गुजरात राज्य के राष्ट्रीय सेवा योजना के विद्यार्थियों ने राजयोग शिविर में भाग लिया। वे पाण्डव भवन माउंट आबू में ब्र.क. दादी प्रकाशमणी तथा अन्य राजयोग शिक्षिकाओं के साथ।

न्यूयार्क में 'भारत दिवस परेड' के अवसर पर एक सुन्दर झांकी का दृश्य

भाता बाल कृष्णन, न्यायाधीश, उच्चतम न्यायालय, के पाण्डव भवन, आबु पधारने पर ब्र.कु.दादी प्रकाशमणि जी उन्हें ईश्वरीय सौगात दे रही हैं।

नई दिल्ली में हुए विश्व सिन्धी सम्मेलन में सम्बोधन करती हुई ब्र.कु. हृदयमोहिनी जी।

हापुड में आयोजित चरित्र निर्माण आध्यात्मिक मेले का उद्घाटन दीप जलाकर करती हुई ब्र.कु. दादी निर्मलशान्ता जी, ब्र.कु. हृदयमोहिनी जी भ्राता कैलाश मित्तल तथा अन्य।

न्युयार्क में संयुक्त राष्ट्र संघ को 'युनिवर्सल पीस चार्टर' भेंट किया गया। संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव की ओर से सहायक सचिव भ्राता राबर्ट मुल्लर ने चार्टर स्वीकार किया। भ्राता ब्र.कु. जगदीश चन्द्रजी का स्वागत करते हुए भ्राता राबर्ट मुल्लर जी।

भ्राता दिनकर लाल महता, न्यायाधीश, राजस्थान उच्च न्यायालय, के ओमशान्ति भवन, आबू में पधारने पर, उन का स्वागत करती हुई ब्र.कु.दादी प्रकाशमणि जी। ब्र.कु. करुणा, तथा ब्र.कु. आनन्द किशोर जी साथ में हैं।

पटेल नगर (नई दिल्ली) में हुए आध्यात्मिक मेले के उद्घाटन समारोह में सम्बोधन करते हुए देहली के मुख्य कार्यकारी पार्षद भ्राता जगप्रवेश चन्द्र जी।

अमृत सूची

क्र०सं०	विषय	पृ०	क्र० सं०	विषय	पृ०
१.	आओ आत्मिक दीप जलाएँ ...	१	९.	उद्योग, युवा और योग ...	१४
२.	मनुष्य-जीवन का उच्चतम लक्ष्य (सम्पादकीय) ...	२	१०.	क्या मनुष्य को अपने भोजन के लिये हिंसा का अधिकार है ? ...	१७
३.	मिट्टी के दीप जलाने वाले (कविता)	४	११.	आत्म-अनुशासन व प्रशासन ...	१९
४.	राजयोग और मनोविज्ञान ...	५	१२.	सचित्र समाचार ...	२१
५.	आओ मनाएं सच्ची दिवाली (कविता) ...	८	१३.	विदेशों से प्राप्त ईश्वरीय सेवा समाचार ...	२३
६.	आध्यात्मिक सेवा समाचार (चित्रों में) ...	९	१४.	सत्य का करिश्मा ...	२५
७.	ईश्वरीय याद और सेवा से लाभ ...	१२	१५.	उदित हो रहा नव अरुण ...	२७
८.	बिना दाम की चीज ...	१३	१६.	समय ...	२८
			१७.	आध्यात्मिक सेवा समाचार ...	२९

आओ आत्मिक दीप जलाएं

हर वर्ष, हर घर में अनेकों दीप जलाये जाते हैं। घर को तो अवश्य ही रोशन कर दिया जाता है। क्षणिक मन मुदित भी होता है परन्तु सदा के लिए चित्त हर्षित हो जाए और हमेशा के लिए मन से अन्धकार दूर हो जाए, ऐसा नहीं हुआ। बल्कि हुआ कुछ विपरीत हो। हर वर्ष दीप जगे परन्तु आन्तरिक दीप बुझते गये, मन में अंधकार बढ़ता गया। मन भटकता गया, मानव अधिक अशान्त व परेशान होता गया। अब आवश्यकता है कि हम स्थूल दीपक जलाने के साथ साथ अत्मिक दीपक भी जलाएं।

प्रचलित दिवाली तो वर्षों से मनाते आ रहे हैं। परन्तु अब पुरुषोत्तम संगम युग पर जबकि ज्योति स्वरूप परमात्मा सत्य ज्ञान देकर रूहों की ज्योति जगा रहे हैं तो क्यों न हम सच्ची दिवाली मनाएं। तो, आओ ईश्वरीय ज्ञान रूपी घृत अपने चेतन आत्म-दीपक में डालें और स्वयं की ज्योति जगाकर जग को रोशन करें। जब हम स्वयं की ज्योति जगाकर फिर दूसरों की ज्योति जगायेंगे अर्थात् दीप-दान करेंगे तो ससार से माया का अन्धकार दूर हो जायेगा और विश्व स्वर्ग बन जायेगा।

घर की सफाई के साथ २ मन की सफाई भी करें—

सारे देश में दिवाली के उपलक्ष में मानों सफाई अभियान चालू हो जाते हैं। सभी अपना पूरा वर्ष का इक्ट्ठा हुआ कूड़ा करकट फेंक देते हैं। परन्तु कभी अपने अन्दर झांक कर भी देखा है कि इस पवित्र घर में हमने क्या क्या गन्दगी इक्ट्ठी की है। जो जीवन में बदबू व बीमारी पैदा कर रही है। वो गन्दगी है, ईर्ष्या द्वेष, वैर-भाव, परचिन्तन, निंदा, चुगली, आदि आदि। तो इस पर्व पर हम सफ़ाई के साथ यदि अपनी आन्तरिक सफाई भी कर लेंगे तो निःसन्देह हमारे घर में जक्ष्मी वास करेगी।

लक्ष्मी की पूजा तो बहुत की अब लक्ष्मी बनो—

दिवाली पर सफाई करके और फिर पूजन करके लोग लक्ष्मी का आह्वान करते हैं। लक्ष्मी को धन की देवी समझकर और धन को ही जीवन का मूल मानकर वे सच्चे मन से लक्ष्मी का पूजन करते हैं। ये सब तो जन्म जन्म किया परन्तु अब आवश्यकता है कि घर घर में चेतन लक्ष्मी का वास हो। लक्ष्मी अर्थात् सुलक्षणी—वो नारी जो श्रेष्ठ आचरणों वाली एवं पवित्र है। आओ, हम इस दिवाली के शुभ अवसर पर लक्ष्मी तुल्य श्रेष्ठ व पावन बनने का व्रत लें। जब एक-एक नारी चेतन लक्ष्मी बन जायेगी तो सोचो ये संसार कितना सम्पन्न बन जायेगा। तो ईश्वरीय ज्ञान का घृत डालकर, योगाभ्यास द्वारा आत्म-ज्योति जगाकर हम लक्ष्मी समान, सम्पन्न व पावन बन सकते हैं।

तो यदि इस प्रकार दिवाली के आध्यात्मिक रहस्य को जानकर हम सच्ची दिवाली मनायेंगे तो हमारा जीवन सदा के लिए प्रकाशित हो जायेगा और घर घर में लक्ष्मी का आगमन हो जायेगा।

मनुष्य-जीवन का उच्चतम लक्ष्य

नर से श्री नारायण तथा नारी से श्री लक्ष्मी पद की प्राप्ति

यह कितने आश्चर्य की बात है कि मनुष्य एक मननशील प्राणी होते हुए भी अपने जीवन के लक्ष्य को स्पष्ट रूप से नहीं जानता अथवा उसके विषय में सभी मनुष्यों का एक मत नहीं है! बहुत-से लोग तो आज यही कहते हैं कि उनका लक्ष्य अपने धन्धे में सफलता प्राप्त करना है। वे कहते हैं—"हमारे जीवन का लक्ष्य तो यही है कि हमारा कारखाना अच्छी तरह से चल निकले, व्यापार काफ़ी अच्छा हो जाय अथवा हमारे दर्जे (Status) में हमें तरक्की मिल जाय ताकि हम काफ़ी धन प्राप्त करके अपनी गृहस्थी को भी अच्छी तरह से सुख-सुविधाएँ पहुंचा सकें और स्वयं भी बुढ़ापे में अथवा अपनी असमर्थता की स्थिति में, धन के बल से ठीक रह सकें।" मानो ये लोग धन ही को अपना ईश्वर मानते हैं और अपना सारा दिन धन ही की साधना और आराधना में लगा देते हैं। दो शब्दों में हम कह सकते हैं कि प्रायः मनुष्य **सम्पत्ति की प्राप्ति** ही को अपने जीवन का लक्ष्य समझते हैं।

परन्तु प्रश्न उठता है कि जिनके पास **धन या सम्पत्ति** है, क्या वे अपने जीवन से पूरी तरह सन्तुष्ट हैं? क्या धन के अतिरिक्त मनुष्य को और किसी प्राप्ति की इच्छा नहीं होती? आप देखेंगे कि यदि किसी मनुष्य के पास धन तो काफ़ी हो परन्तु स्वास्थ्य न हो तो भी वह अपने जीवन को अधूरा मानता है। बहुत बार रोगी मनुष्य चाहते हैं कि बहुत धन खर्च करने पर भी उन्हें किसी प्रकार स्वास्थ्य मिल जाय परन्तु फिर भी उन्हें आरोग्यता प्राप्त नहीं हो पाती। अतः स्पष्ट है कि धन ही सब कुछ नहीं है बल्कि **स्वास्थ्य** भी मनुष्य के लिए ज़रूरी है।

मन की शान्ति आवश्यक

इसके अतिरिक्त, **मन की शान्ति** भी मनुष्य के लिए बहुत आवश्यक है। यदि मनुष्य के मन को शान्ति प्राप्त नहीं है तो उसे धन भी नहीं सुहाता। कितने ही उदाहरण इतिहास में हमें मिलते हैं कि राजाओं ने अपनी अतुल सम्पत्ति को भी मन की शान्ति के लिए छोड़ दिया।

इसी प्रकार, आप देखेंगे कि कई लोग **जनता द्वारा यश** प्राप्त करने अथवा उनकी शासन सत्ता को अपने हाथ करने, उनका नेता बनने अथवा उनकी सेवा करके भी उन द्वारा 'जनता-सेवक' कहलाने के लिए अपने तन की भी सुध नहीं लेते, अपने धन को भी न्योछावर कर देते हैं और अपने मन के चैन की भी परवाह न करके उसे समझा-बुझा देते हैं।

तो आप विचार करने पर इसी निर्णय पर पहुंचेंगे कि हर-एक मनुष्य के जीवन का लक्ष्य है तो दुःख की पूर्ण निवृत्ति और सुख की प्राप्ति ही, परन्तु आज वह अधूरे और अल्प-स्थाई सुख की प्राप्ति के लिए अधूरे ही प्रयत्न कर रहा है। कोई मनुष्य धन का सुख प्राप्त करने के लिए अपने स्वास्थ्य और अपने मन की शान्ति की परवाह नहीं करता, कोई मन की शान्ति के लिए धन के सुख को और घर-बार को छोड़कर जंगल में जाने की सोच रहा है और कोई तन का सुख प्राप्त करने के लिए सारा धन लुटाने को तैयार हो रहा है, तो कोई जनता की खातिर अथवा जनता से सुख प्राप्त करने के लिए इन सभी से हाथ धोने के लिए तैयार है। परन्तु वास्तव में तो दुःख की अत्यन्त निवृत्ति तथा तन, मन, धन और जन, इन चारों प्रकार के सम्पूर्ण और स्थाई सुखों की प्राप्ति ही मनुष्य के जोवन का लक्ष्य है।

आप ज़रा सोचिये कि उस मनुष्य का क्या हाल होगा जिसके पास धन तो बहुत हो परन्तु जिसका बच्चा कुल को कलंकित करने वाला हो, अवज्ञाकारी हो या धन को बरबाद करने वाला हो और कोई न कोई उत्पात मचाते रहने वाला हो अथवा जिसके कारख़ाने के मज़दूर आये दिन हड़ताल करके अथवा काम से जी चुराकर मालिक को हानि पहुंचाते रहें? उस धनवान का क्या हाल होगा जिस पर चोरों ओर डाकुओं की निगाह लगी रहती हो और जिसके

पीछे पड़कर मतलबी दोस्त खूब गुलछर्रे उड़ाते रहें अथवा जो धनवान मनुष्य अपने ही व्यसनों और वासनाओं के कारण शराब, कबाब और रबाब में ही अपने दिन गुज़ारने लगे ? अथवा, उस धनवान की क्या गति होगी जो धन इकट्ठा करते-करते चार दिन की चाँदनी देखकर शीघ्र ही मौत के मुंह का ग्रास बन जाय ? अतः धन ही सब कुछ नहीं है बल्कि मनुष्य को चारों ही प्रकार का सम्पूर्ण और सदा काल का सुख चाहिए।

हो सकता है कि आज किसी मनुष्य के जीवन में यह चारों प्रकार का सुख थोड़ा-बहुत हो। परन्तु आप देखेंगे कि आज की दुनिया में किसी भी व्यक्ति के सब दिन सम्पूर्ण सुख से नहीं गुज़रते। आज यदि कोई सुखी है तो कल उसे तन का रोग, व्यापार में हानि, सम्बिन्धयों की ओर से अशान्ति, सरकार की ओर से कठिनाई, दुर्घटना के कारण कष्ट, प्राकृतिक आपदा के कारण पीड़ा अथवा बुढ़ापे का दुःख आ घेरता है। आज के दुःखी संसार में स्वजनों-सम्बन्धियों इत्यादि के कारण भी तो मनुष्य दुःखी होता है। अतः आज यदि कोई व्यक्ति दुःखी नहीं है तो भी उसे समझना चाहिए कि इस जीवन में कभी भी दुःख आ सकता है और वैसे भी इस तमोप्रधान पुरानी तथा निस्सार दुनिया में सुख का सार नहीं । सच्चे सुख की अवस्था (Stage) तो वह अवस्था है जिसमें दुःख का पता ही न हो। मनुष्य को न केवल अपने जीवन में सम्पूर्ण सुख प्राप्त हो बल्कि उसे अन्य किसी के दुःख का भी समाचार न मिले, वह अन्य किसी को भी दुःखी न देखे और उसके चारों ओर किसी भी प्रकार का दुःख हो ही न। उसे यह मालूम ही न हो कि रोग, शोक, लड़ाई-झगड़ा, आपदा और अशान्ति क्या होते हैं ! परन्तु आज मनुष्य को सुख की इस स्टेज का ज्ञान ही नहीं है। वह समझता है कि इस दुनिया में दुःख तो अनादि काल से चला आया है। मनुष्य ने अपने इस जीवन के आरम्भ से दुःख का अस्तित्व तो देखा ही है, अतः वह समझता है कि मनुष्य-जीवन तो ऐसा ही होता है। उसे सम्पूर्ण सुखमय जीवन का पता ही नहीं है, इसलिए वह उसके लिए पुरुषार्थ ही नहीं करता बल्कि, आज की दुनिया में जो ऊँचा जीवन समझा जाता है, वह उसी को ही अपना लक्ष्य मानता है। वह सम्पूर्ण सुख की बात को कल्पना मानता है अथवा उसे असम्भव समझता है।

परन्तु आप ज़रा सोचिये कि यदि यह चारों प्रकार का सुख कभी भी मनुष्य को उपलब्ध नहीं हो सकता तो मनुष्य इसकी इच्छा ही क्यों करता है और इसके लिए भगवान् से प्रार्थना क्यों करता है ? मनुष्य को इच्छा हमेशा होती ही उस चीज़ की है। जो पहले कभी न कभी उसे प्राप्त रही हो अथवा जिसका उसने पहिले कभी अनुभव किया हो परन्तु समयान्तर में वह उसे गँवा बैठा हो। अतः आज मनुष्य 'विश्व-शान्ति', 'रामराज्य', 'घर-घर स्वर्ग', 'सभी में भाई-भाई जैसा प्रेम' इत्यादि के लिए जो इच्छा और प्रयत्न करते हैं उनसे स्पष्ट है कि कभी विश्व की, राज्य की, घर-गृहस्थ की तथा मानव की ऐसी स्थिति रही होगी जिसमें सभी को सम्पूर्ण और स्थाई सुख प्राप्त रहता है और दुःख, रोग, अशान्ति, लड़ाई का नाम मात्र भी नहीं होता। वास्तव में वही सुख प्राप्त करना मनुष्य-जीवन का लक्ष्य है। उस अवस्था को **'जीवन्मुक्त अवस्था'** कहते हैं क्योंकि वह जीवन सभी प्रकार के बन्धनों, दुःखों, रोगों इत्यादि से मुक्त, अति सुखी, अति प्यारा और अति मधुर और सार वाला जीवन होता है।

अब प्रश्न उठता है कि क्या इस मनुष्य-सृष्टि में ऐसा भी कोई जीवन हो सकता है अथवा क्या ऐसे भी कभी कुछ लोग हुए हैं जिनके जीवन में वह चारों प्रकार का सुख ऊपर बताई स्टेज तक प्राप्त हो ? विश्व का जो इतिहास आज मनुष्य मात्र को मालूम है उसके अनुसार तो कोई ऐसा व्यक्ति नहीं हुआ परन्तु वास्तविकता यह है कि सृष्टि के आदि काल में हमारे जो पूर्वज हुए हैं उन्हें सम्पूर्ण और स्थाई सुख प्राप्त था। उस काल को सतयुग अथवा कृतयुग के नाम से याद किया जाता है और उस युग के सर्व-प्रथम विश्व महाराजन और विश्व-महारानी श्री लक्ष्मी और श्री नारायण की मूर्तियाँ भी बाद में पूजी जाती रही हैं। उस समय की सृष्टि ही वास्तव में स्वर्ग अथवा वैकुण्ठ थी और 'यथा राजा-रानी तथा प्रजा' सभी को अपार सुख प्राप्त था। कहावत प्रसिद्ध है कि शेर और गाय एक घाट पर पानी पीते थे' और 'दूध और घी की नदियाँ बहती थीं', 'प्रकृति उनकी दासी थी', 'काया उनकी निरोगी थी', अकाले

मृत्यु नहीं होती थी, सभी मनुष्य दिव्य-गुण धारी और सतोप्रधान होते थे और इसलिए उन्हें "देवी-देवता" कहा जाता है। आपने ध्यान दिया होगा कि श्री लक्ष्मी-श्री नारायण को दोनों ताजों से युक्त दिखाया जाता है अर्थात उन्हें रत्न-जड़ित सोने के ताज से तथा प्रकाश के ताज "प्रभा मण्डल" से भी सुसज्जित दिखाया जाता है। ये दोनों ताज भी क्रमशः सुख-सम्पत्ति और शान्ति के सूचक हैं।

आज श्री लक्ष्मी और श्री नारायण की जीवन-कहानी को न जानने के कारण भारतवासी उनकी जड़ प्रतिमाओं का पूजन मात्र ही अपना कर्त्तव्य समझते हैं। वे उन-जैसा बनने का पुरुषार्थ नहीं करते। उन्हें यह मालूम नहीं है कि कभी हम भारत-वासियों का अपना जीवन भी पहले ऐसा ही था और कि श्री लक्ष्मी-श्री नारायण सतयुग में इसी सृष्टि पर चक्रवर्ती, अखण्ड, निर्विघ्न और अति सुखकारी राज्य करते थे। उन्हें ज्ञान नहीं है कि सत-युग में 'यथा राजा रानी तथा प्रजा' सभी पूर्ण सुखी थे परन्तु बाद में धीरे-धीरे सृष्टि में दुःख आया। दुःख क्यों आया और अब वह कैसे दूर हो, वे इन रहस्यों को भी नहीं जानते। अतः वे जीवन को श्रेष्ठ बनाने की ओर ध्यान नहीं देते बल्कि यह समझ बैठे हैं कि जीवन जैसे आज चल रहा है, सदा वैसा ही रहता है।

अतः आज आवश्यकता इस बात की है कि मनुष्य अपने जीवन के इस लक्ष्य को जाने और उसकी प्राप्ति के लिए पुरुषार्थ करे। श्री लक्ष्मी और श्री नारायण आदि देवी-देवता भी तो हमारी ही तरह तन-धारी थे और वे गृहस्थी भी थे। यदि हम अपने जीवन में पवित्रता और दिव्य गुणों की धारणा करें अथवा कमल पुष्प के समान रहें। हम भी तो घर-गृहस्थ के कर्त्तव्यों को निभाते हुए उनके समान बन सकते हैं।

मिट्टी के दीप जलाने वाले

ब्र०कु० राजकुमारी, मजलिस पार्क, दिल्ली

कुटिया की छत पे
मिट्टी का दीप जलाने वाले
तन की भृकुटी में
आत्म-दीप जला के देख
वर्ष-वर्ष दिवाली मनाने वाले
क्षण-क्षण दिवाली मना के देख

विजयादशमी मनाई तूने
अब दिवाली सामने है
अनुमान संशय के निकालो जाले
संकल्पों की सेना भगानी है
पवित्रता की सफेदी, दिव्यता का शृंगार
स्थूल सजावट के पहले—
ऐसी सजावट करके देख
छत पे दीप जलाने वाले
मन में दीप जला के देख
आत्म दीप जला के देख

उस दीप को आँधी से खतरा
उसका घृत पल-पल घटता
बाती उसकी जल जाती
आँधी तूफाँ में हिलती रहती
ज्ञान-घृत योग की बाति इसमें
तूफाँ कोई न टिके समक्ष इसके
ऐसा अलौकिक दीप जला के देख
मिट्टी का दीप जलाने वाले
अविनाशी दीप जला के देख

उस दीवे तले अंधेरा होता
प्रकाश बाहर, भीतर रीता होता
कभी जले कभी अमावस रहता
आज देखो रौशन कल बुझ जाता
उस दीप को तूने जलाया
यह दीप बाप खुद लाया
इस दीप में जीवनमुक्ति का राज़
सदा सर्वत्र प्रकाश खुशी दिन-रात
ऐसी अजब अलख जगा के देख
मिट्टी का दीप जलाने वाले
आत्म दीप जला के देख

लक्ष्मी की मूरत पूजने वाले
स्व को सुलक्षण मूरत बना के देख
मिट्टी के दीप जलाने वाले
आत्म दीप जला के देख

राजयोग और मनोविज्ञान

—ब्र०कु० सूरजकुमार, आबू

मन में सतत संकल्प प्रवाहित होते रहते हैं। संकल्प ३ प्रकार के हैं। साधारण, व्यर्थ व समर्थ। व्यर्थ संकल्पों से मन की शक्ति तीव्रता से नष्ट होती है। साधारण संकल्पों (आवश्यक संकल्प, जो कि हमें कार्य व्यवहार के लिए करने होते हैं) में शक्ति का धीमे उपयोग होता है और समर्थ संकल्पों से शक्ति वृद्धि को पाती है। क्योंकि व्यर्थ संकल्प होने से संकल्प-गति तीव्र हो जाती है और पवित्र संकल्प होने से संकल्प गति धीमी हो जाती है। मन में जितने कम संकल्प होंगे, उतना ही मन शक्तिशाली होगा, अधिक संकल्प मन को कमजोर बना देते हैं।

आज तक अनेक मनोवैज्ञानिकों ने मन की विभिन्न स्थितियों की व्याख्याएं की हैं, परन्तु मन के पतन को रोकने में कोई भी सफ़ल नहीं हुआ। इतना ही नहीं बल्कि मनुष्य मन की गति को भी पूर्ण रूपेण नहीं जान पाया। क्योंकि जिस भी मनोवैज्ञानिक ने खोज की, उसने या तो अपने मन के अन्दर झांका या उस समय के दूसरे मनुष्यों के मनों की जांच की। परन्तु प्रत्येक मन की अलग २ स्थिति होती है। क्योंकि मन एक नहीं है जितने मनुष्य हैं उतने ही मन हैं। और महत्वपूर्ण बात तो यह है कि विभिन्न काल में हर मन की प्रकृति भी बदलती रहती है। जब मन पर सतोप्रधानता का प्रभाव होता है तो उसके लक्षण कुछ और होते हैं और जब मन पर रजो या तमो की छाया होती है तब मन के लक्षण और होते हैं।

मनोवैज्ञानिकों ने कुछ समय पूर्व विभिन्न मनों की वृत्तियों की जांच करके यह निष्कर्ष निकाल लिया कि 'काम' मनुष्य की स्वाभाविक भूख की तरह है, उसे रोका नहीं जा सकता। परन्तु इन्हें यह मालूम नहीं कि उनकी खोज से १००० वर्ष पूर्व मन की क्या स्थिति थी उससे और २००० वर्ष पूर्व मन की क्या स्थिति थी। अगर वे यह जानते कि मूल रूप में मन की प्रकृति सम्पूर्ण पावन थी तो वे काम को भूख कहने की गलती न करते। भूख तो पवित्रता है, काम तो सड़ा-गला भोजन है।

अब परमशिक्षक परमात्मा ने सर्वप्रथम तो यह स्पष्ट किया कि मन, चेतन आत्मा की ही एक शक्ति है। और मन को योग-युक्त करने का सरल मार्ग दिखाया। उन्होंने मन की विभिन्न स्थितियों की व्याख्या की और मन को पूर्णतया दिव्य व शक्तिशाली बनाने का मार्ग बताया। वह मार्ग है राजयोग। राजयोग की पद्धति पूर्ण मनोवैज्ञानिक है। उसकी सविस्तार व्याख्या यहां की गई है।

सर्व प्रथम तो सभी को यह सत्य रहस्य जानना आवश्यक है कि आत्माओं की अनादि रूप से ही सम्पूर्ण शक्ति भी अलग-२ है। किसी आत्मा की सम्पूर्ण शक्ति ९० डिगरी है, किसी की ८०^0, किसी की ७०°···किसी की १०°··· आदि आदि। अब यहां उस आत्मा की चर्चा करेंगे जिसकी शक्ति ८०^0 है।

जैसे प्रकाश किरणों के रूप में, ध्वनि तरंगों के रूप में फैलती है, वैसे ही हमारे संकल्प प्रकम्पनों (Vibrations) के रूप में चारों ओर फैलते हैं। इन प्रकम्पनों की गति अति तीव्र है। ये एक सेकिंड में ही असंख्य मील की दूरी पर पहुँच जाते हैं। और जैसे पदार्थ की मात्रा भी उससे निकलने वाली ऊर्जा के कारण शनैः शनैः कम होती जाती है, वैसे ही मन के अर्थात् आत्मा की शक्ति भी संकल्प रूप से बाहर निकलती रहती है अर्थात् आत्मा की शक्ति धीरे-धीरे कम होती जाती है।

मन में सतत संकल्प प्रवाहित होते रहते हैं। संकल्प ३ प्रकार के हैं। साधारण, व्यर्थ व समर्थ। व्यर्थ संकल्पों से मन की शक्ति तीव्रता से नष्ट होती है। साधारण संकल्पों (आवश्यक संकल्प, जो कि हमें कार्य व्यवहार के लिए करने होते हैं) में शक्ति का धीमे उपयोग होता है और समर्थ संकल्पों से शक्ति वृद्धि को पाती है। क्योंकि व्यर्थ संकल्प होने से संकल्प-गति तीव्र हो जाती है और पवित्र होने से संकल्प

गति धीमी हो जाती है। मन में जितने कम संकल्प होंगे, उतना ही मन शक्तिशाली होगा और अधिक संकल्प मन को कमजोर बना देते हैं।

अत: जब एक ८०° शक्तिवाली आत्मा परमधाम से पृथ्वी पर आती है तो उसके मन में कुछ संकल्प तो उठते ही रहते हैं। इसलिए थोड़ी थोड़ी शक्ति का उपयोग होता रहता है। यही कारण है कि सतयुग में विकर्म व विकल्प न होने पर भी आत्मा की कला कम होती जाती है। परन्तु द्वापर युग के बाद जब मनुष्य विकारों के वश होकर विकर्म करता है तो उसके मन में व्यर्थ संकल्प होने के कारण संकल्पों की गति तीव्र होने लगती है और फलस्वरूप आत्मा की कलाएं तेज़ी से नीचे उतरती हैं।

द्वापुर युग से कलियुग अन्त तक विकर्मों के कारण आत्मा की अत्यधिक शक्ति क्षीण हो जाती है। आत्मा पाप करती है तो उसकी छाप आत्मा पर क्या होती है? पाप कर्म संस्कारों के रूप में आत्मा में छप जाते हैं। संस्कारों का प्रत्यक्षीकरण संकल्पों के द्वारा होता है। और बुरे संस्कारों के कारण संकल्प गति तीव्र होने से संकल्प के प्रकम्पनों के रूप में आत्मा की शक्ति व्यर्थ होती रहती है। तो पाप कर्मों का अन्तिम परिणाम है—आत्मा की सम्पूर्ण शक्तियों का ह्रास। अर्थात ८०° शक्तिशाली आत्मा ५° तक पहुंच जाती है। अब इस ५° शक्ति की आत्मा को पुन: ८०° पर ले जाना है, इसके लिए आवश्यकता है राजयोग की।

राजयोग क्या है?

राजयोग के २ पहलू हैं—

१. अपने को आत्मा समझना अर्थात अशरीरी होना।

२. मन व बुद्धि को परमात्मा के स्वरूप पर एकाग्र करना।

अशरीरीपन क्या है?

मन में चलने वाली संकल्प की गति को धीमा करके इस स्थिति तक ले जाना कि हमें ये महसूस होने लगे कि हमारा मन निसंकल्प हो चुका है—इसे अशरीरी स्थिति कहते हैं यही "गहन साइलैन्स" की स्थिति है। इसमें आत्मा को परमशान्ति का अनुभव होने लगता है।

क्योंकि इस प्रकार मन की शक्ति का प्रवाह रुक जाता है अत: उसकी शक्ति कम नहीं होती। अर्थात ५° पर पहुंची हुई आत्मा अब ४° पर नहीं जाएगी।

आज तक प्रचलित योग अपूर्ण—

आज तक प्रचलित सभी योगों की अन्तिम स्थिति निसंकल्प समाधि या भावातीत स्थिति है अर्थात संकल्पों को शून्य कर देना है। निश्चय ही इससे शक्ति का ह्रास रुक जाता है। परन्तु प्रश्न है कि शक्ति में वृद्धि कैसे हो? वृद्धि केवल निसंकल्प होने से तो नहीं होगी। यही कारण है कि इन योगों से विकर्म विनाश नहीं होते। अर्थात् आत्मा मुक्ति को नहीं पा सकती। जब तक साधक अभ्यास करता है, उसे स्वयं में बल महसूस होता है, तदोपरान्त वह स्वयं को वहीं खड़ा पाता है।

इसलिए केवल आत्मिक स्वरूप में स्थित होना अर्थात् निसंकल्प स्थिति तक पहुंचना ही योग नहीं है। **योग का अर्थ है—आत्मा का सम्बन्ध परमात्मा से जोड़ना।** यद्यपि यही व्याख्या योग-दर्शन में भी है परन्तु परमात्मा के धाम व स्वरूप के बारे में स्पष्टीकरण न होने के कारण साधक, अपने मन को परमात्मा पर एकाग्र नहीं कर सके। फलस्वरूप आत्मिक शक्तियों में वृद्धि नहीं हुई, ह्रास ही हुआ और मनुष्य संसार के पतन को नहीं रोक सके।

योग का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

जब वह ५° पर पहुंची हुई आत्मा, अशरीरी होकर अर्थात् अपने ह्रास को रोक कर **अपने मन व बुद्धि को परमधाम में परमात्मा के स्वरूप पर एकाग्र करती है—इसे ही राजयोग कहा जाता है।**

इस भौतिक संसार में किसी भी पदार्थ का हर कण दूसरे से जुड़ा हुआ है। हम इन आंखों से जिस भी वस्तु को देखते हैं, उससे हमारा सम्पर्क हो जाता है। उसका प्रतिबिम्ब भी हमारे नयनों में बन जाता है और उसके बारे में कुछ संकल्प भी हमारे मन में उठते हैं। फलस्वरूप हमारे व उस वस्तु के मध्य वाइब्रेशन्स के माध्यम से सम्पर्क हो जाता है। और शक्ति (Energy) का आदान-प्रदान होने लगता है।

हमारे मन से फैलने वाले सभी वाइब्रेशन्स हमारे आस पास की प्रकृति पर भी प्रभाव डालते हैं। जब हम किसी दूर बैठे हुए व्यक्ति को याद करते हैं, तो हमारे

संकल्प वाइब्रेशन्स के द्वारा तुरन्त ही वहां पहुंच जाते हैं। इस प्रकार हमारा प्रत्येक संकल्प दूसरों पर प्रभाव डालता है। **हमारे व्यर्थ घृणात्मक संकल्प दूसरों पर बुरा प्रभाव डालते हैं और हमारे अच्छे, शुभ व खुशी के संकल्प दूसरों पर अच्छा प्रभाव डालते हैं।** मनोविज्ञान भी इस सत्य को स्वीकार करता है कि हमारे प्रत्येक विचार का प्रभाव प्रकृति पर पड़ता है।

तो जब हम योगाभ्यास में अपनी बुद्धि को परमात्मा के स्वरूप पर एकाग्र करते हैं और मन को एक संकल्प में स्थित करते हैं तो आत्मा व परमात्मा के बीच सम्पर्क हो जाता है। जिसे शक्ति सम्पर्क (Energy contact) कहते हैं और सर्व शक्तिवान की शक्तियों का प्रवाह आत्मा की ओर हो जाता है। इस प्रकार आत्मा की शक्ति में वृद्धि होने लगती है। अर्थात अब वह आत्मा ५^0 से १०^0, २०^0, ३०^0,··· ८०^0 तक पहुंचकर सम्पूर्ण हो जाती है।

इस शक्ति वृद्धि को ही दूसरे शब्दों में विकर्म विनाश होना कहा जाता है। क्योंकि विकर्मों का अन्तिम स्वरूप शक्ति का ह्रास है। इस प्रकार राजयोग द्वारा ही आत्मा मुक्त होती है।

यद्यपि कई मनोवैज्ञानिक व योगी इस शक्ति वृद्धि के लिए एकाग्रता भी करते हैं, परन्तु वे परमात्मा के अतिरिक्त, किसी विन्दु ज्योति या मूर्ति या मन्त्र पर एकाग्रता करते हैं। इस एकाग्रता से उनकी शक्ति का ह्रास तो रुक जाता है, परन्तु शक्ति में वृद्धि नहीं होती, क्योंकि विन्दु या मूर्ति सर्वशक्तिवान नहीं हैं।

मनुष्य वातावरण का रचयिता—

वेद मतावलम्बी कहते हैं कि यज्ञ द्वारा वातावरण को शुद्ध किया जाता है। यह एक बहुत ही साधारण सी विधि है। परन्तु वातावरण दूषित हुआ कैसे? फैक्ट्रियों के धुएं ने वायुमंडल को दूषित किया। वह भी एक प्रदूषण है, जिस पर थोड़ा सा प्रभाव यज्ञों का पड़ सकता है।

परन्तु वातावरण को दूषित करने वाले मनुष्यों के बुरे संकल्प हैं। जैसे किसी आश्रम का वातावरण वहां पर उपस्थित मनुष्यों के पवित्र संकल्पों के कारण ही पवित्र व शान्तिमय होता है जो कि मनुष्यों के मन को शान्त करता है व प्रेरणा देता है। आज करोड़ों मनुष्य बुरे संकल्पों से वातावरण को दूषित कर रहे हैं, इस प्रदूषण को यज्ञ से नहीं रोका जा सकता। उसके शुद्धिकरण की विधि है राजयोग।

जब आत्मा योग-युक्त होकर शान्त-स्वरूप में स्थित हो जाती है तो उससे शान्ति की किरणें चारों ओर फैलती हैं और अशान्ति के वाइब्रेशन्स नष्ट हो जाते हैं। **जब आत्मा योग द्वारा पवित्रता के वाइब्रेशन्स चारों ओर फैलाती है तो विकारों से लिप्त दूषित वातावरण स्वच्छ होने लगता है। इस प्रकार एक योगी सतत योग-युक्त हुआ वायुमंडल को पावन करता है।**

अतः कोई भी शिकायत नहीं कर सकता कि हमारे घर का, आफिस का या संसार का वातावरण गन्दा है इसलिए हमारी एकाग्रता नहीं होती। हमें चाहिए कि हम पवित्र विचारों से अपने आस पास के वातावरण को बदलें। **हम जिन भी विचारों में रहते हैं वही वाइब्रेशन्स हमारे चारों ओर एक प्रकाश पुंज बना लेते हैं। यदि हम पवित्र और ऊंचे विचारों में रहेंगे और योग-युक्त रहेंगे तो हमारे चारों ओर फैला प्रकाश पुंज, रक्षक की तरह हमारे साथ रहेगा और किसी भी मायावी वातावरण का हमारे ऊपर प्रभाव नहीं होगा।** तो इस प्रकार चाहे हम अपने वातावरण को प्रतिकूल बनाये या अनुकूल। और प्रत्येक योगाभ्यासी को इसी विधि से अपने शयन कक्ष के वातावरण को भी शक्तिशाली बनाना चाहिए।

प्रकम्पनों का प्रकृति व जानवरों पर प्रभाव—

मनोवैज्ञानिकों के शोध के अनुसार यदि एक ही बगीचे में दो एक ही नस्ल के पौधे लगाए जाएं और एक पौधे के पास बैठकर रोज अच्छे विचार किए जाएं या मधुर संगीत बजाए जाएं तथा दूसरे पौधे के पास व्यर्थ व घृणात्मक विचार किए जाएं तो दोनों पौधों में व उनके फूलो में बहुत अन्तर होगा। इसी प्रकार एक चिन्तित व उदास व्यक्ति के आंगन के पौधों में तथा एक प्रसन्न और खुश परिवार के आंगन के पौधों में भी अन्तर होता है। इससे स्पष्ट है कि मनुष्य के मन के संकल्पों का प्रकृति पर प्रभाव पड़ता है।

इस तरह मनुष्य की मनोस्थिति का प्रभाव जानवरों पर भी पड़ता है। मान लीजिए एक कुत्ता तेजी से भौंकता हुआ आपकी ओर आता है और आप अविचलित स्थिति में शान्त खड़े रहते हैं तो कुत्ता आपके पास आकर रुक जाएगा और यदि आप भागे तो वह

आपका पीछा करेगा।

एक बार हम दो बहनों के साथ एक जिलाधीश महोदय के घर गये। जैसे ही हम वहां बैठे तो उसके दो सफेद सुन्दर छोटे कुत्ते के बच्चे अति स्नेह से हमारी गोद में खेलने लगे। थोड़ी देर बाद ही वहां के मुख्य चिकित्सक अधिकारी परिवार सहित जिलाधीश से मिलने आये, परन्तु उन दोनों कुत्तों ने उनका वहां प्रवेश करना भी कठिन कर दिया। यह है वाइब्रेशन्स का प्रभाव। इसी तरह योगियों को अहिंसात्मक वृत्ति का प्रभाव शेर, चीतों पर भी पड़ता है और उनकी हिंसात्मक वृत्ति बदल जाती है।

हम ब्राह्मण आत्माएँ इस संगमयुग पर अपने योग के पवित्र प्रकम्पनों द्वारा प्रकृति व जानवरों को भी सतोप्रधान बना देते हैं। जिस कारण सतयुग में शेर व गाय भी साथ २ अहिंसात्मक रूप में रहते हैं, और प्रकृति भी सुखदायी सतोप्रधान हो जाती है। क्योंकि जानवरों के मन-बुद्धि की शक्ति एक योगी के मन-बुद्धि की शक्ति से बहुत कम होती है। अतः एक योगी के पवित्र व शक्तिशाली प्रकम्पनों का प्रभाव जानवरों पर तुरन्त पड़ता है। और संस्कार बदलने लगते हैं।

हम जानते हैं कि पदार्थ या तत्व में न्यूक्लियस के चारों ओर विभिन्न कक्षाओं में इलेक्ट्रोन्स (Electrons) घूम रहे हैं और उनको इस गति पर ही किसी तत्व के गुण धर्म आधारित हैं। योग के शक्तिशाली प्रकम्पनों से उन इलैक्ट्रोन्स की गति को उत्तेजित किया जा सकता है और वे शीघ्र ही अपनी कक्षाओं में परिवर्तन कर लेंगे अर्थात् एक कक्षा से दूसरी कक्षा में कूदने लगेंगे और इस प्रकार उस तत्व के गुण बदल जाएंगे। अर्थात योग-शक्ति द्वारा तत्वों के इलैक्ट्रोन्स को गतिमान किया जा सकता है। और प्रकृति को सतोप्रधान सुखदाई बनाया जा सकता है।

योगी का हर संकल्प प्रकृति पर प्रभाव डालता है। और इसी सिद्धान्त के आधार पर एक शक्तिशाली योगी प्रकृति को भी अपने अधीन कर लेता है। परन्तु इस सिद्धि स्वरूप की स्थिति को वही प्राप्त कर सकता है जिसने संकल्प-शक्ति को महसूस करके अपने एक एक संकल्प को व्यर्थ होने से बचाया हो।

आओ मनाएँ सच्ची दिवाली

इस धरती पर स्वर्ग बनाने, आओ मनाएँ सच्ची दिवाली
आत्मा का दीप जगा कर, लाएँ जीवन में रोशनी निराली

दे आत्मा की पहचान सबको, मिटाएँ विकारों के मूल देहअभिमान को
अंधेरे मन में करें उजाला, याद करके ज्ञान सूर्य परमात्मा को
अटूट मुहब्बत करके शिव से, बनाएँ आत्मा को शक्तिशाली
इस धरती पर स्वर्ग बनाने, आओ मनाएँ सच्ची दिवाली

अवगुण रूपी किचड़ा निकाल, मन को मन्दिर बनायेंगे
पवित्रता को धारण करके, दिव्य गुणों का शृंगार करेंगे
खुशियों के खज़ाने हों भरपूर, लायेंगे जीवन में बहार निराली
इस धरती पर स्वर्ग बनाने, आओ मनाएँ सच्ची दिवाली

मुख से मीठा वचन बोलकर, स्नेह की लहर फैलायेंगे
करके संस्कारों का मधुर मिलन, देवता हम बन जायेंगे
पिछले जन्मों के खाते को, योगाग्नि से भस्म करेंगे
बढ़ाकर पुण्य कर्मों की पूंजी, पुण्यात्मा हम बन जाएंगे
पायेंगे सम्मान धर्मराज से, बनाकर आत्मा को पापों से खाली
इस धरती पर स्वर्ग बनाने, आओ मनाएँ सच्ची दिवाली

दावनगिरी में ब्र .कु. अनुसूया तथा निर्मला कर्नाटक के मुख्य मन्त्री भ्राता रामकृष्ण हेगडे को सर्व आत्माओं का चित्र भेंट करते हुए

सिवनी (म.प्र) में स्नेह मिलन कार्यक्रम में सम्बोधन करते हुए ब्र. कु. ओमप्रकाश जी। साथ में ब्र. कु. कमल तथा भ्राता धर्मचन्द जैन बैठे हैं।

मणिनगर-अहमदाबाद में कल्याण चेम्बर्स में आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए ब्र. कु. सरला जी, भ्राता आर. के. शाह तथा अन्य।

गोरेगांव–बम्बई सेवाकेन्द्र की ओर से आयोजित 'पाज़िटिव हैल्थ प्रदर्शनी' के उद्घाटन पश्चात् अपने विचार लिखती हुई डा० ललिता राव।

दावनगिरी में 'युवा निर्माण' उत्सव में सम्बोधन करते हुए भ्राता के. एम. कोटी, डिप्टी कमिश्नर चित्रदुर्ग।

ब्यावर में 'तेजामेले' के उपलक्ष्य में लगी चरित्रनिर्माण प्रदर्शनी में ब्र.कु. अनुराधा से चित्रों पर समझते हुए वहां के एस. डी. एम. भ्राता माणक चन्द जैन।

रायपुर में जेसिस कल्ब द्वारा आयोजित सर्व धर्म सम्मेलन में प्रवचन करती हुई ब्र. कु. कमला जी।

तिनसुखिय सेवाकेन्द्र पर ब्र .कु सत्यवती जी भ्राता रमेश तायेल, एस. पी. तिनसुखिया, भ्राता सिंह जी, कमाण्डर बी. एस. एफ. तथा उद्योगपति भ्राता रासीवासिया को साहित्य सौगात देते हुए

रामपुर में आध्यत्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन भ्राता प्रदीप चन्द जी द्वारा सम्पन्न हुआ

चन्दौसी में गणेश चौथ मेले में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन दृश्य

नीलोरखेड़ी (हरियाणा) में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन प्रिन्सीपल आर. के. सोनी जी कर रहे हैं

रायपुर में रोटरी कल्ब में भाषण करती हुई ब्र .कु. किरण बहन।

जमखण्डी में सार्वजनिक कार्यक्रम में भाषण करते हुए डा० गिरीश पटेल जी।

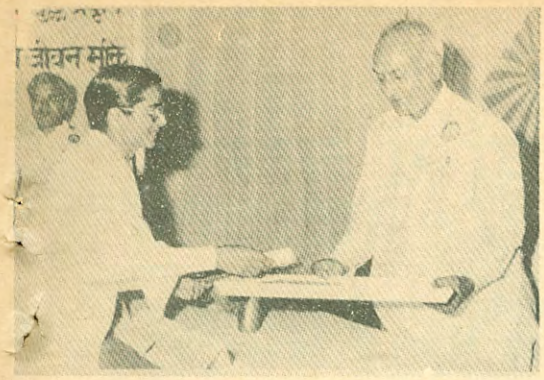

← जीन्द में राजयोग भवन के वार्षिक उत्सव के उपलक्ष्य में हुए विश्व शान्ति सम्मेलन के अवसर पर ब्र. कु. विजय उद्योगपति भ्राता गोरीशंकर को लक्ष्मी नारायण का चित्र भेंट करते हुए।

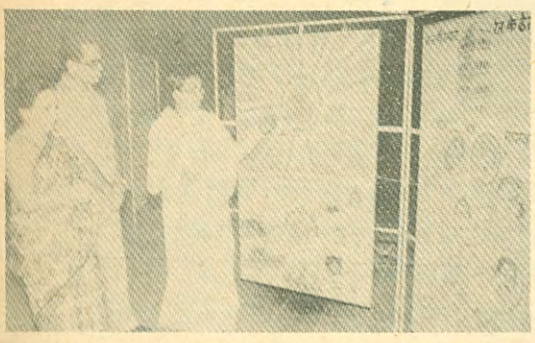

गोंदिया में ब्र. कु. मंजु → फादर फेत्मीकश मौरस,सेठ काकुभाई जसाणी, सेठ लेड्मल जी भोजवानी तथा अन्य को प्रदर्शनी के चित्रों पर समझाते हुए

← भावनगर टाउन हाल में आयोजित प्रदर्शनी के चित्रों पर वहां के कलैक्टर तथा उन की धर्मपत्नी को समझाती हुई ब्र. कु. गीता बहन

पाटन के डी. एस. पी. को → चित्रों पर समझाती हुई ब्र. कु. नीलम

← चिकोडी में जूनियर कालेज में प्रवचन करते हुए डा० गिरीश पटेल जी।

शिवसागर में चरित्र निर्माण → प्रदर्शनी का उद्घाटन वहां के डी. सी. तथा एस. पी. दीप जला कर कर रहे हैं।

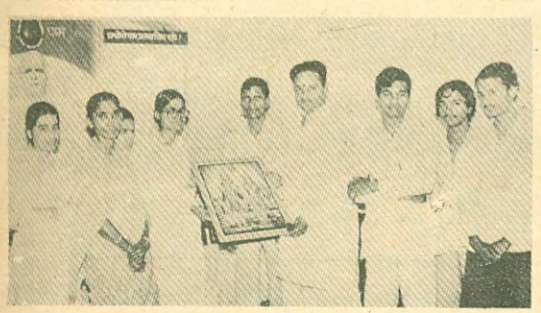

← कोल्हापुर में ब्र. कु. सुनन्दा नगर पालिका के अध्यक्ष को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए

चिराला (विजयवाड़ा) में → आयोजित प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर (दायं से) ब्र. कु. चन्द्रकान्ता, सविता, भ्राता भक्तवत्सल श्रीहरी जी, तथा ब्र. कु. बसराज जी विराजमान हैं।

← अमृतसर में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक संग्रहालय में ब्र. कु. आदर्श ब्रिगेडियर भ्राता आर. पी. चड्डा तथा उन की धर्म पत्नी को चित्रों की व्याख्या करते हुए।

सी. डब्लयु. ए. हाल में → प्रदर्शनी की उद्घाटन करते हुए टैलकू के ए. जी. एम.

← जीन्द में राजयोग भवन के वार्षिक उत्सव के उपलक्ष्य में हुए विश्व शान्ति सम्मेलन के अवसर पर ब्र. कु. विजय उद्योगपति भ्राता गोरीशंकर को लक्ष्मी नारायण का चित्र भेंट करते हुए।

गोंदिया में ब्र. कु. मंजु फादर फेल्मीकश मौरस,सेठ काकुभाई जसाणी, सेठ लेडुमल जी भोजवानी तथा अन्य को प्रदर्शनी के चित्रों पर समझाते हुए →

← भावनगर टाउन हाल में आयोजित प्रदर्शनी के चित्रों पर वहां के कलैक्टर तथा उन की धर्मपत्नी को समझाती हुई ब्र. कु. गीता बहन

पाटन के डी. एस. पी. को चित्रों पर समझाती हुई ब्र. कु. नीलम →

← चिकोडी में जूनियर कालेज में प्रवचन करते हुए डा० गिरीश पटेल जी।

शिवसागर में चरित्र निर्माण प्रदर्शनी का उद्घाटन वहां के डी. सी. तथा एस. पी. दीप जला कर कर रहे हैं। →

← कोल्हापुर में ब्र. कु. सुनन्दा नगर पालिका के अध्यक्ष को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए

चिराला (विजयवाड़ा) में आयोजित प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर (दायं से) ब्र. कु. चन्द्रकान्ता, सविता, भ्राता भक्तवत्सल श्रीहरी जी, तथा ब्र. कु. बसराज जी विराजमान हैं। →

← अमृतसर में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक संग्रहालय में ब्र. कु. आदर्श ब्रिगेडियर भ्राता आर. पी. चड्डा तथा उन की धर्म पत्नी को चित्रों की व्याख्या करते हुए।

सी. डब्लयु. ए. हाल में प्रदर्शनी की उद्घाटन करते हुए टैलकू के ए. जी. एम. →

ईश्वरीय याद और सेवा से लाभ

(ब्र०कु० जानकी, लन्दन)

याद में कब २ सुस्ती आ जाती, झुटका व घुटका खाने लगते, क्योंकि प्राप्ति का पता नहीं है। सेवा से आती है चुस्ती। तो सेवा की चुस्ती याद की सुस्ती को खत्म कर देती है। याद से राजयोगी बनते, सेवा से कर्मयोगी बनते, याद से सरलता आती सेवा से धैर्यता आती। याद और सेवा का बैलेन्स कभी भी अपसेट नहीं होने देता। एकरस स्थिति बनती जाती। योगी की दृष्टि महासुखकारी है, अगर चाहें तो चेक कर सकते कि मेरी दृष्टि कहा तक सुखकारी बनी है। और कोई मेहनत अगर न भी पहुंचे, मुख न चला सकें हाथ पांव भी न चला सकें तो कम से कम दृष्टि को तो सुखकारी बनाने का पुरुषार्थ कर सकते हैं। सिर्फ बाबा को सामने रख चेक करो कि मेरी दृष्टि बाप समान पावन है, मीठी है, प्रेम भरी है। बाबा से सुख लेकर दूसरों को सुख दे रही है। भले तन भी न चले, परन्तु मेरे-पन की फीलिंग है तो दुख होता है। और प्रश्न उठता है कि मेरा तन चलता नहीं, रोगी है, मैं बाबा की सेवा नहीं कर सकती, परन्तु अगर मैंने बाबा के हवाले किया है, तो बाबा अपने आप देख लेगा। यह भी एक युक्ति है। मन भी अगर मेरा है तो धक्के खायेगा। अगर बाबा का है तो सीधा हो जायेगा। धन भी अगर देखते हैं कि व्यर्थ जा रहा है या बाबा के काम में नही यूज हो रहा तो उसका भी बोझ चढ़ता है। अगर बाबा की सेवा में यूज हो रहा है तो बाबा भी देखता है और फिर दुआयें भी मिलती हैं। अगर हम धन को ठीक रीति यूज नही करते तो भी बुद्धि भटकती है। दान का प्रत्यक्षफल है खुशी और अचल अडोल अवस्था भी बनती जाती है। बाकी भविष्य तो बना ही पड़ा है, उसका फिक्र नही क्योंकि यहां पर देना, दूसरे पार लेना।

विदेशी भाईयों के कुछ प्रश्न और दादी जानकी जी के उत्तर—

प्रश्न : बाबा ने हमें इतनी जो मर्यादायें बतलाई हैं, कभी २ उनको फालो करना मुश्किल हो जाता है ? ऐसा क्यों ? **उत्तर :** बाबा ने हम बच्चों को खाना पीना, उठना-बैठना, रात देर से ना सोना, सवेरे अमृतवेले उठना यह सभी जो मैनर्स सिखाये हैं उनमें हमारा ही कल्याण है। कभी २ माया छोटी चूही के रूप में आती है। बड़ा चूहा आये तो दिखाई देता परन्तु छोटी चूही बड़ी तेज़ होती। उसे पकड़ना भी मुश्किल होता। अगर हम बच्चे किसी भी मर्यादा का उल्लघंन करते हैं तो उससे कभी २ बड़ा नुकसान हो जाता है। अगर हम खुद के लिए नहीं कर सकते तो दूसरों के भले के लिए तो करें। मुझे देखकर अगर किसी ने नियम तोड़ा तो उसका बोझ भी मुझ पर होगा। इसलिए भले दूसरों के कल्याण अर्थ ही मर्यादा पालन करें।

प्रश्न :- दूरांदेशी तथा विशाल बुद्धि का साक्षात्कार कैसे हो सकता है ?

उत्तर :- अशरीरी भव का अभ्यास करने से दरांदेशी बुद्धि का साक्षात्कार हो सकता और नथिंग न्यू का पाठ पक्का करने से, संकल्पों को एक सेकण्ड में स्टाप करने का अभ्यास होने से विशालबुद्धि का साक्षात्कार होता है।

प्रश्न :- बाबा ने हम बच्चों की वाणी को सरल व मीठा बनाने के लिए क्या सिखाया है ?

उत्तर : ओमशान्ति का मंत्र। हम बच्चों को स्वयं को देखना है कि क्या मेरा आवाज़ दिन प्रतिदिन मीठा होता जा रहा है। उसमें सरलता आती जाती है।

प्रश्न :- राजयोगी बनने के लिए क्या गुरू को छोड़ना पड़ेगा ?

उत्तर :- राजयोगी बनने के लिए सिर्फ गुरू को ही नहीं लेकिन सारी दुनिया को छोड़ना पड़ेगा। आपका गुरू आपके जीवन परिवर्तन को देखकर खुश होगा।

प्रश्न :- आप लोग इतने खुश क्यों रहते हो ? क्या अनेक दुःखी मनुष्यों को देखकर दुःख नहीं होता ?

उत्तर :- दुःखी मनुष्यों के दुःख को दूर करने के लिए ही तो हम खुश रहते हैं। अगर हम भी उनके साथ दुःखी हो जायेंगे तो उन्हें दुःख से छुड़ायेंगे कैसे ? डाक्टर का काम होता है रोगी का रोग दूर करना तथा दूसरों को भी रोग से बचाना, ना कि स्वयं रोगी बन जाना।

बिना दाम की चीज

ब्र०कु० सुजाता, मंगलूर

बहुत दिन पहले एक गुरु के पास दो शिष्य पढ़ते थे। एक का नाम था श्याम दूसरे का राम। दो-तीन वर्ष की पढ़ाई के बाद गुरु ने उन्हें दो मास की छुट्टी दी। तब गुरु ने दोनों की बुद्धिमत्ता देखने के लिए कहा "बच्चो, ऐसी चीज को ढूंढ कर आओ जिसकी दुनिया में पाई की भी कीमत न हो। दोनों ने बात को मान लिया और वहाँ से चले। श्याम ने सोचा अभी दो महीने हैं फिर कभी सोच लेंगे। वह मित्र-सम्बन्धियों से मिलने, बातें करने में और घर के कारोबार में जुट गया। राम यात्रा करने के विचार से काशी की ओर चल पड़ा। बार-२ गुरु का प्रश्न उसे याद आने लगा। बेचारे ने तो बहुत सोचा, ढूँढा। अनेक स्थानों पर गया, अनेक तरह के लोगों से उसकी मुलाकात हुई, पर उसे ऐसी कोई चीज दिखाई न दी कि जिसका दाम पाई का भी न हो। दिन बीतते गए और ढूंढते-ढूंढते थक गया। दो मास पूरा होने में केवल तीन-चार दिन ही बाकी रह गये तब राम गुरु के पास लौटने लगा। बेचारा प्रश्न का उत्तर न पाने से उदास था। रास्ते में ही श्याम का गांव था तो सोचा शायद उसे उत्तर मिला होगा और वह उसका घर ढूंढने लगा। एक घर पर उसे थोड़ी भीड़ दिखाई दी और शोर भी सुनाई दे रहा था। राम ने वहाँ चलकर देखा तो वहाँ पर एक आदमी का देहान्त हुआ था। घर के लोग रोने-पीटने लगे थे और गाँव के लोग उसे सजा रहे थे। वह तो श्याम का पिता ही था। शव को उठाते समय उसके सगे थोड़ी देर और रोकना चाहते थे लेकिन गाँव वालों ने जबरदस्ती शव को कंधे पर उठाये शमशान की ओर चल पड़े।

एक बार श्याम ने कहा था "मेरे पिताजी बहुत दयालु हैं, उन्हें गांव में सभी लोग प्यार करते हैं, सम्मान देते हैं।" राम सोचने लगा 'जिसे कल तक प्यार कर रहे थे वही आज उसे क्षण भर रखना नहीं चाहते। जिससे कल तक कुछ चाहते थे उससे आज कुछ भी नहीं। कल तक जो कीमती था आज कुछ भी नहीं'। तब उसे निश्चय हुआ कि दुनिया में मानव के निर्जीव शरीर की पाई की कीमत नहीं है। कोई उसे रखना भी नहीं चाहता।

दूसरे दिन दोनों गुरू के पास पहुंचे। बेचारा श्याम तो गुरू का प्रश्न ही भूल चुका था। कहने लगा 'मेरे पिता का देहान्त हुआ इसलिये मैं वह चीज़ ढूंढ न सका'। राम ने जवाब दिया 'गुरूवर्य, दुनिया में बिना दाम की चीज तो मानव का निर्जीव शरीर है। उसे तो बिना दाम से भी कोई रख नहीं सकता।' उसके जबाब से गुरू ने खुश हो कर कहा 'शाबास बेटा।'

इसलिये, बच्चों, मानव का यह शरीर विनाशी है। आत्मा अविनाशी है। जब तक आत्मा शरीर में है तब तक इस शरीर की कीमत है। आत्मा ही शरीर से सब कुछ करती है न कि शरीर। जब आत्मा शरीर से निकल जाती है तब उस शरीर को जला देते हैं। चाहे वह गुरू हो, सन्यासी हो या मन्त्री हो— कोई भी हो उसके शरीर को खत्म कर देते हैं। बची हुई हड्डियों को भी पानी में फेंक देते तो उसका नाम निशान तक नहीं रहता। जानवरों की चमड़ी, दाँत, नखुने आदि कुछ काम में आते हैं। उसका दाम होता है। जानवरों की निशानियाँ तो जंगल में पड़ी रहती हैं। मानव जब तक जिन्दा है तो मेरा अपना कहता है फिर भी सब कुछ छोड़ जाता है। लेकिन पाप-पुण्य उसका पीछा करते हैं।

इसलिये बच्चों, जब तक हम आत्मा इस शरीर में हैं तब तक पुण्य कर्म करके पुण्यात्मा बनना है। पाप कर्म करने से अगले जन्म में उसका फल भोगना पड़ता है। अब शिवबाबा कर्म की गति समझाकर पूण्यात्मा बना रहे हैं। समझे !

उद्योग, युवा और योग

—डा० हरीश शुक्ल, पाटन

आज की युवाशक्ति नानाविध अनिष्टों के आवरण में अपनी वास्तविक ओजस्वीता—अस्मीता पर विस्मृति का गहरा परत चढ़ाती आ रही है। परिणाम स्वरूप पापाचार, अनीति, भ्रष्टाचार नैतिक अधः पतन, चरित्र की महंगाई आदि का साम्राज्य विस्तार पा रहा है। सिद्धांत विहीन राजनीति, श्रमरहित सम्पति, चरित्र विहीन ज्ञान, अनैतिक व्यापार, मानवता रहित विज्ञान, त्यागभावना शून्य पूजा और भक्ति, निरंकुश आनंद आदि सप्त पाप ग्रहयुति के चक्कर में आज पूरी मानवता किंकर्त्तव्य विमूढ़ है, तब आज का युवा जगत भी इस आंदोलित विकृत तरंगों से अपने को मुक्त कैसे रख सकता है।

आज सर्वत्र नैतिक मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है। विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र की आश्चर्यजनक प्रगति के साथ आज का युवा तालमेल स्थापित नहीं कर पा रहा है। आज का युवा भय, घबराहट तथा मानसिक कुंठाओं से पीड़ित है। निश्चय ही आज के युवा का भविष्य एक चुनौती पूर्ण स्थिति में है।

मानव-जीवन का अधिकांश समय उसके कार्य-क्षेत्र से संबंध रखता है। कार्य-क्षेत्र से संबंधित शारीरिक और मानसिक श्रम का जीवन के साथ गहरा संबंध है। उसकी मानसिक स्थिति का प्रभाव उसके परिवार के अन्य सदस्यों पर भी पड़ता है। कार्य क्षेत्र का वातावरण परस्पर आदर-भाव, प्रेम, सहयोग तथा मैत्रीपूर्ण भावना से पूर्ण हो—यह प्रत्येक व्यक्ति की अभीप्सा रहती है। शांति, संतुष्टता और उमंग के वातावरण में ही हमारी औद्योगिक एवं व्यक्तिगत जीवन की सफलता समाई है। परन्तु यथार्थतः आज प्रत्येक क्षेत्र में अशांति की जड़ें गहरी उतरती जा रही हैं। जीवन-यापन के अर्थ, कर्म में प्रवृत युवा में ईमानदारी, कार्यकुशलता तथा भ्रातृत्व के फूल खिलें, यह शुभ भावना हर चिंतक के मन में उठ रही है, परन्तु उसका व्यावहारिक हल आज किसी को भी नहीं मिल रहा है। प्रस्तुत चिंतन इसी दिशा का एक सफल समाधान है, जो आज के युवा में अपनी देवोपम तेजस्वीता की पुनः स्थापना कर सकता है।

आज का युवा-जगत इस वास्तविकता से, अपनी ही आंतरिक शक्तियों के अक्षय स्त्रोत से वियुक्त है। स्वयं को भूला हुआ अपने पिता परमात्मा से वियुक्त है तथा इसी के साथ स्वलक्ष्य, स्वधर्म, स्वदेश, स्वधाम तथा स्वकर्म की वास्तविकता से अपरिचित है। अर्थात आज का युवा योगी न होकर वियोगी है। योग अर्थात एकाग्रता "**योगः कर्मसु कौशलम्**" के अनुसार योगयुक्त मानव अपना प्रत्येक कार्य कुशलता से कर पूर्ण सफलता प्राप्त करता है। फल-स्वरूप स्वयं की, स्वकर्मक्षेत्र की तथा राष्ट्र की भी उन्नति होती है। इस सनातन सत्य को आत्मसात करने से मानसिक प्रदूषण के स्थान पर सुख-शांति तथा सम्पन्नता का भागवत् वरदान प्रत्येक मानव को प्राप्त हो सकता है। ऐसे वरदान प्राप्त करने के लिए थोड़ी व्यावहारिक समझ तथा उस समझ की निरंतर स्मृति की ही आवश्यकता है। यह समझ ही सत्य ज्ञान है और उसकी स्मृति ही योग है। अतः प्रथमतः समझ की कुछ आधारभूत बातों पर विचार करेंगे जो योग की ओर अभिमुख करेंगी।

कर्म की महानता

सर्व प्रथम तो यह समझने की आवश्यकता है कि कर्म स्वयं ही महान् है, भले वह छोटा हो। साधारण अथवा छोटा कार्य भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है, जितना बड़ा। अतः छोटे कार्य से कोई व्यक्ति छोटा या साधारण नहीं बनता। जैसे बिजली से बड़े बड़े कार्य सम्पन्न होते हैं, परन्तु बिजली की लाइन के बीच फ्युज का तार टूटा हुआ हो तो बिजली होते हुए भी कार्य रुक जायगा। अतः फ्युज का छोटा वायर भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है, जितना बिजली उत्पन्न करने वाला जनरेटर। उसी प्रकार किसी भी कार्यक्षेत्र में सामान्य आदमी का सामान्य कार्य भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना बड़ा कार्य।

कर्त्तव्य और अधिकार के प्रति सम भावना

व्यावहारिक जीवन एवं कर्मक्षेत्र में कर्त्तव्य और अधिकार अन्योनाश्रित हैं। कर्मचारी अधिकार की माँग को लेकर हड़ताल कर देते हैं तो मालिक वर्ग कर्त्तव्य की भावना से तालाबंदी कर देता है। परिणाम भुक्तभोगी जानते हैं—व्यक्ति और राष्ट्र की मानसिक तथा आर्थिक विपन्नता और गहरी हो

जाती है। आज के युवा को यह समझना है कि कर्त्तव्य और अधिकार साथ-साथ ही चलते हैं। जैसे बिजली का बल्ब तब तक प्रकाशित नहीं होता, जब तक उसके दोनों वायर प्लग में न डाले जाएँ। उसी प्रकार किसी भी कार्यक्षेत्र तथा अध्ययन क्षेत्र में सफलता-रुपी प्रकाश तब तक नहीं आता, जब तक कर्त्तव्य और अधिकार परस्पर पूरक अथवा साथ होकर न चलें। कर्त्तव्य और अधिकार का संतुलन ही सफलता हैं, सम्पन्नता है। वस्तुः जो भी कार्य हो, अपना समझकर करने से कार्य क्षेत्र में सम्पन्नता आती है और कर्तव्य तथा अधिकार के बीच का अंतर समाप्त होता है। निष्ठापूर्वक कार्य करने वाले को अधिकार स्वतः मिल जाते हैं।

सम्पन्नता अथवा सफलता का अर्थ

साधारणतः ऊँची शिक्षा, बड़ी नौकरी तथा सुख सुविधा के आधुनिकतम साधन जिसे प्राप्त हैं, उस व्यक्ति के जीवन को सम्पन्न अथवा सफल कहा जाता है, परन्तु ऐसा व्यक्ति भी किसी असाध्य बीमारी के वश अशांत हो उठता हैं, मानसिक व्यग्रता का अनुभव करने लगता है अथवा जीवन निराशापूर्ण आनंदरहित हो जाए तो उसकी सम्पन्नता किस काम की। वास्तव में शरीर तथा शरीर और उसकी कर्मेन्द्रयों की मालिक चैतन्य शक्ति 'आत्मा' दोनों की सम्पन्नता आवश्यक है। दोनों के लिए रोटी, कपड़ा और मकान की समस्याएँ हल होनी चाहिए। शरीर के पोषण के लिए भोजन की चिंता के साथ आत्मा की भी शुद्ध संकल्पों का ही पोषणयुक्त भोजन मिले इसकी चिंता भी आवश्यक है। ताकि अशुद्ध संकल्पों के भोजन से उत्पन्न ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध आदि की भावना समाप्त हो तथा शुद्ध संकल्पों की खुशी खुमारी की झलक उसके चेहरे पर दिखाई दे। शरीर की रक्षा के लिए जैसे कपड़ों की आवश्यकता है, उसी प्रकार आत्मा को भी बाह्य अशुद्ध तमोप्रधान वातावरण से बचने के लिए योग रूपी कवच (वस्त्र) की नितांत आवश्यकता है। योग अर्थात् ईश्वरीय याद का कवच ही काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार के प्रहारों से रक्षा करता है। तीसरी आवश्यकता मकान की है, आत्मा का घर—'परमधाम' की स्मृति भी आवश्यक है। ताकि मानव अपने को सृष्टि रूपी नाटक का एक अभिनेता समझ अपना अभिनय कुशलता, स्वस्थता एवं निर्लिप्तता से कर सके।

सम्पन्नता का चौथा आधार ऊँची शिक्षा अर्थात् प्रमाणपत्रों की शिक्षा के साथ साथ चरित्र निर्माण का ज्ञान तथा नैतिक शिक्षा की भी उतनी ही आवश्यकता है, जिससे जीवन में दिव्यता का उदय हो। इस प्रकार शारीरिक सम्पन्नता के साथ जो व्यक्ति आत्मा से भी सम्पन्न है, वही सच्चे अर्थों में सम्पन्न है।

दलित अथवा पिछड़ा हुआ कौन?

विभिन्न कार्यक्षेत्र में हर वर्ग, हर जाति-धर्म के लोग काम करते हैं। कोई व्यक्ति किसी जाति में जन्म लेने अथवा साधारण काम करने से दलित अथवा पिछड़ा हुआ नहीं कहा जा सकता। पिछड़े तो वे हैं जो शराब, जुआ, चोरी, धूम्रपान, तम्बाकू आदि व्यसनों के दास बन अपने धन, समय तथा शक्ति का अपव्यय करते हैं और अपने ही घर में दुःख और अशांति फैलाने के निमित्त बनते हैं। व्यसनी व्यक्ति धीरे-धीरे कमजोर होता जाता है और अनेक रोगों का शिकार बन अशांत, पीड़ित दशा में मृत्यु पाता है। ऐसे व्यक्ति स्वयं को, परिवार को तथा राष्ट्र को गहरा नुकसान पहुँचाते हैं। इसके अतिरिक्त लोभ ईर्ष्या, स्वार्थ तथा अन्याय द्वारा अशांति फैलाने के निमित्त बनते हैं तथा समाज एवं राष्ट्र के दुश्मन बनते हैं - ये सब पिछड़े हुए हैं, दलित हैं, दरिद्र हैं तथा शूद्र हैं।

मित्र कौन?

मानव में स्थित उच्च मानवीय गुण ही हमारे मित्र हैं जो कार्यक्षेत्र में शांति तथा समृद्धि को आमंत्रित करते हैं। लोभ और स्वार्थ से अलिप्त रह प्रमाणिक जीवन जीना, सहकार्यकरों के काम में सहयोगी बनना, निष्ठा, उत्साह और मेहनत से कार्य करना, बड़ों के प्रति आदर तथा छोटों के प्रति स्नेह-भावना-ऐसे मानवीय गुणों से ही कार्यक्षेत्र में शाँति और समृद्धि संभव है।

इन सभी गुणों रूपी मित्रों की सहज कृपा प्रत्येक मानव पा सकता है। यदि वह अपने को शरीर (नाम,

रूप, पद, प्रतिष्टा के साथ) न समझ आत्मा समझे और सदैव इस स्मृति में रहे कि मैं आत्मा शांत स्वरूप, प्रेम, आनंद, पवित्रता, शक्ति स्वरूप हूँ। इस सृष्टिमंच पर मैं अपना पार्ट (अभिनय) करने आई हूँ। मुझे सभी के साथ प्रेम और आदर से व्यवहार करना है तथा मुझे जो कार्य सौंपा गया है, उसे निष्ठा एवं निमित्त भाव से पूर्ण करना है।

इस आधारभूत प्रतीति के साथ कुछ व्यवहारिक प्रश्न, समस्याएँ भी कर्मरत मानव के जीवन में आती हैं। जैसे आज महँगाई के दुश्चक्र से कोई मानव बच नहीं पा रहा है। महँगाई के प्रभाव से अवश्य बचा जा सकता है, यदि व्यक्ति अपने विवेक से व्यर्थ की आवश्यकताओं एवं व्यसनों को समाप्त करता जाए। यही मानसिक शांति और स्वस्थता का एक मात्र रास्ता है। मनुष्य को जैसी मानसिक स्थिति होगी, उसके आसपास का वातावरण भी वैसा ही निर्मित होगा। यदि कोई कर्मचारी जब कर्मचोरी करेगा, तो वह अपना कार्य पूरा नहीं कर पाएगा और अपने अधिकारी की आँखों से भी गिर जाएगा। ऐसे व्यक्ति में आत्मग्लानि, चिड़चिड़ापन एवं क्रोध के भाव जगेंगे जिससे वह कार्यक्षेत्र एवं घर दोनों का वातावरण अशांत बनाने के निमित्त बनेगा। इसके विपरीत यदि व्यक्ति कर्मचोर न बन कर्मयोगी बन अपना कार्य करेगा तो समय पर उसका कार्य पूरा हो जाएगा। उसके व्यवहार में नम्रता और प्रेम भाव होगा। इस मानसिक स्थिति में जब वह घर जाएगा तो परिवार के सदस्यों के साथ भी प्रेमपूर्ण व्यवहार करेगा। फलस्वरूप घर में शांति का वातावरण स्थापित होगा। इस प्रकार कार्यक्षेत्र एवं घर दोनों का वातावरण एक दूसरे का पूरक होता है।

कार्ल मार्क्स ने कहा था, "विश्व के कर्मचारी-मजदूरो ! एक हो जाओ, तुम्हारे सब बंधन टूट जाएंगे।" आज मार्क्स की यह ध्वनि प्रत्येक की रग-रग में काम कर रही है और संगठित बन अपनी माँगों को स्वीकार भी करा लेंगे थोड़ी सुविधाएं, थोड़ा आर्थिक लाभ भी पा लेंगे परन्तु इससे उनके सामाजिक, शारीरिक अथवा मानसिक बंधन नहीं टूटेंगे। मार्क्स की इस घोषणा को आज आध्यात्मिक रुप देना पड़ेगा और कहना पड़ेगा, "विश्व के कर्मचारियों-मजदूरों ! ईश्वर के साथ एकता के सूत्र में अपने को बाँधो, तुम्हारे दुःख अशांति तथा विचारों के बंधन टूटेंगे तथा जीवन सुखमय बनेगा"

योग द्वारा ही कर्म में कुशलता संभव है। जब ईश्वर के साथ योग होता है और योगयुक्त बन एकाग्रता से कार्य सम्पन्न होता है, तब एक अनुपम आत्म-संतोष का अनुभव होता है। इसी अनुभव से सामाजिक, शारीरिक, तथा मानसिक दुःख और अशांति के बंधन टूटते हैं, जीवन सम्पूर्ण सुखी, शांतिमय तथा दिव्य बनता है।

परमात्मा विद्युत-शक्ति पुंज है

जैसे एक ही विद्युत शक्ति से भिन्न-भिन्न कार्य होते हैं। यथा-ठंडी हवा के लिए पंखा, प्रकाश के लिए बल्ब, गरमी के लिए हीटर तथा दृश्यश्राव्य सुविधा भी उसी से ली जा सकती है, उसी प्रकार योग द्वारा प्राप्त एकाग्रता की शक्ति से मानव अपने जीवन में दिव्य अनुभूतियाँ प्राप्त करता है। यथा—अपूर्व शाँति का अनुभव होता है, परमात्मा के मिलन एकाग्रता—तादात्म्यस्थिति में जैसे आनंद सागर की लहरों में डूबने झूलने का सुख अनुभव करता है। उसके इस अलौकिक जीवन की सुगन्ध सर्वत्र फैलती है, अन्य लोग भी अनुभव करते हैं। अपने साथियों के लिए वह प्रकाश स्तंभ, आकाश दीप, बन जाता है तथा उसका आध्यात्मिक जीवन, योगी जीवन सभी के लिए मार्गदर्शक बन जाता है।

परमपिता परमात्मा पिताओं का पिता है, प्रभुओं का प्रभु है, देवों का देव है, ईश्वरों का ईश्वर है और सर्वोपरि है, वह समस्त जागतिक विधान का एक मात्र नियंता है। ऐसे परमात्मा के लिए वैदिक साहित्य में अनेक उद्‌गार व्यक्त किये गए हैं।[१] आज तो निश्चय ही इस भागवत सत्ता किंवा परमात्मा के अवतरण और प्रकटीकरण का परम सौभाग्यशाली समय है। अब वे स्वयं अपना परिचय देते, कहते हैं, 'हे वत्स ! मैं परमात्मा सर्व आत्माओं

१. (क) एको विश्वस्य भुवनस्य राजा। ऋक् वेद, ३/३६/४
(ख) स एष एक एक वृदेक एव। अथर्ववेद, १३/५/७
(ग) तमेव विदित्वाति मृत्युमेति। युजुर्वेद, ३१ १८

(शेष पृष्ठ २० पर)

क्या मनुष्य को अपने भोजन के लिए हिंसा का अधिकार है ?

(अनुवाद—ब्र०कु० सुरेश, लक्ष्मीनगर, दिल्ली)

एक मांसाहारी अपने मांस खाने की बुरी आदत को यर्थाथ सिद्ध करने के लिए यह तर्क देता है कि प्रकृति में भी तो एक पशु दूसरे का शिकार करता है। जैसे बिल्ली चूहे को खाती है, सांप मेंडक को, मेंडक रेंगने वाले कीड़ों को और वो कीटों को खाते हैं। इस प्रकार मांसाहारी कुछ अन्य तर्क प्रस्तुत करता है और कुछ प्रश्न भी करता है जो कि डार्विन के विकासवाद नियम पर आधारित होते हैं अथवा "समर्थ ही रह सकता है" (Survival of the fittest) का सिद्धान्त पेश करता है। हम यहाँ कुछ प्रश्नों पर विचार करेंगे कि ये तर्क, झूठ, भ्रम या असत्य पर आधारित हैं। हम एक शाकाहारी दृष्टिकोण से प्रश्नों का उत्तर देंगे।

प्रश्न :—हम इस विशाल जगत में देखते हैं कि एक जानवर दूसरे का शिकार करके जी रहा है। जब प्रकृति का यह क्रम है तो फिर मनुष्य को जानवरों के भोजन पर जीने से क्यों रोका जाय जबकि वह जानवरों में सर्वोच्च है ?

उत्तर :—यह प्रश्न एक गलत विचार पर आधारित है। यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि सारे पशु शिकारी नहीं हैं, उदाहरण के लिए गाय, बैल, घोड़ा, ऊंट, हाथी, खच्चर, बंदर और इसी प्रकार से दूसरे बहुत से बड़े व छोटे जानवर दूसरों का शिकार नहीं करते और न ही वे जानवर के मांस पर जीते हैं। मनुष्य की तुलना शिकारी जानवरों से क्यों की जाए ? जीव विज्ञान के आधार पर वह दांत, अन्तड़ियों, हाथ इत्यादि से ही केवल शिकारी जानवरों से भिन्न नहीं है बल्कि वह पशुओं से बुद्धिमत्ता, सभ्यता और नैतिकता में भी श्रेष्ठ है। मनुष्य के श्रेष्ठ होने का यह अर्थ नहीं है जैसा कि ऊपर के प्रश्न में है, बल्कि यह सूचित करता है कि उसका व्यवहार श्रेष्ठ, अधिक सभ्य और दयालु है। इसलिए उसे रक्षक और दयालु होना चाहिए न कि मारने वाला या कातिल और वह भी जबकि प्रकृति ने उसे अपने स्वाद की सन्तुष्टी और खाने की दूसरी काफी चीजें प्रदान की हुई हैं।

आगे यह भी समझ लेना चाहिए कि मांस खाने वाले जानवरों में कीड़े खाने वाले (Hosts of Insects) गिद्ध, कौआ, शेर, चीते और समुद्री जानवर (Marine Animals)—प्रकृति ने मेहतर के रूप में प्रदान किए हैं। मनुष्य गिद्ध की तरह मेहतर (Scavenger) नहीं है। उसका काम मृतक के मांस को सफाई करना नहीं जैसे कि गिद्ध करता है।

इसके अतिरिक्त यह भी मस्तिष्क में रखना चाहिए कि बहुत से शिकारी पशु शुरू से ही शिकारी नहीं थे, अक्समात् सामाजिक वातावरण के परिवर्तन ने उन्हें दूसरों का शिकार करने के लिए बाध्य कर दिया, शुरू में (originally) शेर और चीते मांसाहारी या मनुष्य भक्षक नहीं थे। अब भी पालतु शेर का बच्चा या चीता शिकार नहीं करता। फिर भी जो जानवर दूसरों को जरूरत या मजबूरी के हिसाब से मारते हैं तो वे भी झटके से मारते हैं, ताकि उनको कम से कम दर्द हो। लेकिन मनुष्य पशुओं को बूचड़-खाने में (A place of Slaughter) ले जाते हैं और पशु अपनी विचार शक्ति (By Virtue of their Telepathic faculty) या मनुष्य के बर्ताव में परिवर्तन के कारण यह समझ जाते हैं कि उन्हें मारने के लिए ले जाया जा रहा है। इसलिए वे अपने बचाव के लिए चिल्लाते, पुकारते व संघर्ष करते हैं। वे यह भी अनुभव करते हैं कि उनका जीवन खतरे में हैं और वह व्यक्ति जिसने कुछ घंटे पहले उसे खिलाया तथा प्यार किया था अब उसे एक कसाई के हाथ में दे रहा है। जानवरों को पैदल (By Land), रेल या समुद्री मार्ग से ले जाने में काफी कष्ट होता है, जानवर यह जानते हैं कि उन्हें मारने के लिए ले जाया जा रहा है। बहुत से पशुओं को इससे आघात

पहुँचता है और वे मानसिक पीड़ा का अनुभव करते हैं। परन्तु खेद की बात है कि मनुष्य इतना बर्बर हो गया है कि वह केवल अपनी स्वाद पूर्ति के लिए उनकी बलि लेता है। यदि उसमें ज़रा भी मानवता होती तो वह उनकी बलि लेने की बजाए अपने स्वाद का ही बलिदान कर देता।

अगर यह मान भी लिया जाए कि बहुत से जानवर अपने शिकार पर जीते हैं तो भी मनुष्य को उनकी नकल नहीं करनी चाहिए क्योंकि वह खेती बाड़ी जैसे श्रेष्ठ कार्यों के द्वारा भी अपना जीवन यापन कर सकता है, जो कि मांस खाने से सस्ता एवं सभ्यतापूर्ण है।

प्रश्न :—अगर आपका विरोध यह है कि मांसाहारी को हत्या की आवश्यकता है और हत्या से कष्ट होता है तब फिर जब मनुष्य चलता है तो बहुत सी चीटियां नहीं मर जाती और जब वह सांस लेता है तो सूक्ष्म जीवाणुओं को कष्ट नहीं होता? अगर मनुष्य की नियमित दिनचर्या में बहुत से कीड़े हर रोज़ मर जाते हैं, क्या कारण है कि उसे जानवरों को अपने भोजन के लिए मारने से रोका जाए?

उत्तर :—प्रश्न है कि क्या मनुष्य जीवधारियों (Living Beings) को जानबूझ कर मारता है? यदि मनुष्य जानबूझ कर अपने पैर के नीचे रेंगने वाले जीवाणुओं के झुंड को कुचल देता है फिर तो वह एक पाप का कार्य करता है। दूसरी ओर यदि उसकी हिंसा करने की कोई इच्छा नहीं है, परन्तु असावधानी से या अनिवार्य रूप से कुछ कीड़े, चीटियां या सूक्ष्म जीवाण मर जाते हैं तो इसमें उसे दोषी नहीं ठहराया जा सकता। ज्यादा से ज्यादा उसके बारे में यह कहा जा सकता है कि वह कुछ हद तक अपनी इस लापरवाही के लिए जिम्मेवार है। परन्तु जानवरों को अपने भोजन के लिए मारना तो एक प्रत्यक्ष उल्लंघन है। जो मारता है, उसे कसाई कहा जाता है और जिस स्थान पर इनकी हत्या की जाती है उसे बूचड़खाना या कसाई घर कहा जाता है। और ये बातें किसी के लिए भी घृणा योग्य हैं। यदि हम किसी भी सभ्य व्यवसाय के व्यक्ति को कसाई कहें तो वह इसमें अपना अपमान महसूस करेगा और वह ज़ोर से इसका विरोध करेगा। कोई नहीं चाहेगा कि कोई कसाई जल्लाद या फांसी देने वाला उसका मित्र हो। जब हम कसाईपन को एक नीच व्यवसाय मानते हैं फिर हम अप्रत्यक्ष रीति से (Indirectly) मदद क्यों दें, चाहे वह कसाईपन या जल्लाद का काम क्यों न हो।

इसके अतिरिक्त यह जानना भी आवश्यक है कि जब कोई न्यायाधीश किसी कत्ल के अपराध का निर्णय करता है तो वह यह भी देखता है कि क्या अपराधी ने अपनी इच्छा से मारा है। अगर अपराधी किसी को मारने में सफल नहीं होता है लेकिन उसकी मारने की इच्छा थी, फिर भी उस पर कत्ल करने का दोष लगाया जाएगा। लेकिन अगर कोई दोषी को इच्छा के बिना मारा जाता है तब यह स्थिति भिन्न हो जाती है। मांस खाने की स्थिति में कसाई के द्वारा हत्या इच्छापूर्वक होती है और जो इसे खाते हैं वह भी इसके प्रोत्साहन देने में अपराधी हैं। मनुष्य का चरित्र उसके विचार और इच्छापूर्वक कार्यों पर आधारित है। किसी को भी इस रक्तमय कार्य में हिस्सेदार नहीं होना चाहिए। जिस जानवर को पाला गया हो, फिर उसी के मांस की तरकारी (Dish) का स्वाद लेना एक विश्वासघात की अति है। इसकी तुलना हम सूक्ष्म जीव या कीटों की मृत्यु से नहीं कर सकते जो कि अचानक हमसे टकरा जाते हैं या हमारी बिना इच्छा के मर जाते हैं।

प्रश्न :—वनस्पति विज्ञान या जीव विज्ञान के अनुसार पेड़-पौधों या खाने योग्य अन्न (Cereals) सब्जियों, फलों इत्यादि में भी जान है इसलिए पशु और पौधे एक सतह पर हैं, फिर मनुष्य से शाकाहारी होने के लिए क्यों कहा जाय?

उत्तर :—जीव विज्ञान के अनुसार एक जीव जो बढ़ता है, अपनी पद्धति के अनुरूप निर्जीव पदार्थ को जीव पदार्थ में परिवर्तन करता है और जो अपने जैसा जीव पुनः उत्पन्न करता है, एक जीवित प्राणी है। इस दृष्टि कोण से पौधों को भी जीवित पदार्थ कहा जाता है चूंकि उनका भी एक समय होता है जब वह बढ़ते, मुर्झाते या मर जाते हैं। लेकिन वह पशुओं से इस में काफी भिन्न हैं क्योंकि उनमें पशुओं की तरह आत्मा नहीं होती। अगर जीवन, बढ़ने और मुर्झाने को कहा जाता है या जितने समय तक यह क्रम रहे, फिर पौधों में भी जीवन कहेंगे। लेकिन यदि जीवन किसी व्यक्ति की चेतना, व्यवहार, चरित्र तथा

(शेष पृष्ठ २० पर)

आत्म-अनुशासन व प्रशासन

— ब्र०कु० आत्म प्रकाश, आबू पर्वत

आज संसार में चारों ओर अनुशासनहीनता के नज़ारे दिखाई देते हैं। विद्यार्थी अपने अध्यापक की आज्ञाओं का पालन नहीं करते, लड़के, लड़कियां अपने मां बाप की अवहेलना करते हैं। जनता शासकों की बातें नहीं मानती तो दफ्तरों में कर्मचारी अधिकारियों से बेपरवाह रहते हैं। सड़कों पर देखो, चाहे गलियों में, बाज़ारों में देखो, चाहे बसों, गाड़ियों में, आज मनुष्य ने अनुशासन के महत्व को गौण कर दिया है। परन्तु यह अनुशासन व संयम मनुष्य में पुनः कैसे आ सकता है, प्रस्तुत चर्चा में हम इस बात का विश्लेषण करेंगे।

यदि मां बाप अपने परिवार के शासक हैं, नेता देश के शासक हैं, अधिकारी विभिन्न विभागों के शासक हैं व प्रधानाचार्य विद्यालयों के शासक हैं, परन्तु सबसे पहला शासक मनुष्य स्वयं का है। यह देह एक बहुत बड़ी फैक्टरी है, इसका संचालन करने वाली आत्मा है। अब देखें यह आत्मा स्वयं पर कितना संचालन करती है। इस बड़ी फैक्टरी में मन व बुद्धि मुख्य अधिकारी हैं और बाकी सभी कर्मेन्द्रियां कार्यकर्त्ता हैं।

आज हम स्वयं पर या दूसरों पर ध्यान दें, क्या हमारा मन और बुद्धि हमारे अधिकार में है या आज संचालक आत्मा अपने मन बुद्धि के अधीन हो चुकी है। पूरे २४ घन्टे की दिनचर्या पर ध्यान देने से यह स्पष्ट है कि मनुष्य अधिक समय मन का गुलाम है। वो मनुष्य जो सदा स्वतन्त्रता-प्रेमी है, अपनी कर्मेन्द्रियों का गुलाम है। उसे मन जिधर चाहे खींच ले जाता है। वह सदा ही अपने बुरे संस्कारों के अधीन रहता है, कभी आँखें उसे धोखा देती हैं, कभी मुख।

तब जबकि आत्मा का अपनी कर्मेन्द्रियों व ज्ञानेन्द्रियों पर ही अधिकार नहीं है तो भला वह दूसरे पर शासन कैसे करेगी? यही हालत आज हर शासक या प्रशासक की है। उनकी बात उनकी कर्मेन्द्रि ही नहीं मानती, तब भला अन्य उसकी बातें कैसे मानेंगे। अतः इस विश्व-विधान में यह अटल नियम है कि जो मनुष्य स्वयं पर राज्य करना जानता है, वही मनुष्य विश्व पर राज्य कर सकता है। यदि कोई शासक स्वयं को नियंत्रण करने में सफल नहीं है तो वह राष्ट्र या विश्व को नियन्त्रण करने में भी सफल नहीं होगा।

अतः स्वयं के जीवन को, परिवार को, दफ्तर, फैक्टरी या राज्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए आत्म-संयम की आवश्यकता है। पहले हमारा मन अनुशासित हो, अर्थात् उसमें ईश्वरीय आज्ञाओं के विरुद्ध संकल्पों का प्रवाह न चलता रहे। फिर हमारी आँखें अनुशासित हों, वह दूसरों को आत्मिक दृष्टि से देखें। फिर हमारा मुख अनुशासित हो, मुख पत्थर न फेंके, फिर हमारी जिह्वा संयमित हो, वह खाने को देख लपलप न करे, इस प्रकार आत्म-संयम से ही जीवन सुखी बनता है।

परन्तु यह आत्म-अनुशासन जागृत कैसे हो? आज हर आत्मा इतनी स्वछन्द हो चुकी है कि उसे संयमित करना पहाड़ को तोड़ने जैसा है। न चाहते भी मन भागता है। इसके लिए आवश्यकता है आत्म-ज्ञान की और आत्मिक स्वरूप के अभ्यास की। "मैं एक पवित्र व शान्त स्वरूप आत्मा हूँ, यह देह मेरा मन्दिर है, मैं इससे भिन्न हूँ" इस अनुभूति की तथा अभ्यास की आवश्यकता है। इस अभ्यास से कर्मेन्द्रियां शीतल, मन शान्त व संस्कार दिव्य होने लगते हैं और आत्मा का इन सब पर नियन्त्रण हो जाता है।

अब तो मनुष्य ने स्वयं (आत्मा) को इस मन बुद्धि व कर्मेन्द्रियों से इतना मिला दिया है कि सबका एकीकार हो गया है। आत्मा जोकि संचालक है, स्वयं को कर्मेन्द्रियों व कर्मचारियों से अलग नहीं समझती, तब भला उसका इन पर नियन्त्रण हो भी कैसे?

हमारे अनुशासन में हमारे कार्यकर्त्ता तब ही आ सकते हैं जबकि उन्हें हमारे प्रति पूर्ण स्नेह व सत्कार हो। जब वे हमें महान आत्मा समझते हों, जब उनमें हमारे प्रति समर्पण भाव हो। यदि ऐसा नहीं है और हम शक्ति प्रयोग करके दूसरों को अपने

अधिकार में लाना चाहें तो यह क्षणिक है, यह सफल प्रयोग नहीं है।

हमारे प्रति स्नेह व दूसरों का सत्कार तब ही जागृत होता है जब हम स्वयं संयमित होते हैं, जब हमारे जीवन में नम्रता होती है, जब अहंकार का दूषित हथियार हम प्रयोग नहीं करते, जब क्रोध की विषैली फुंकरों में हम भस्मीभूत नहीं होते, जब हम स्वयं समय को महत्व देते हैं। यदि कोई अधिकारी क्रोध का प्रयोग करता हो, तब निसन्देह कर्मचारी उससे डरेंगे और शान्त भी रहेंगे, परन्तु मन लगाकर वे काम नहीं करेंगे। अधिकारी अहंकार के कारण भले ही वे दिखावे रूप से उसका सम्मान करें, परन्तु पीछे उसकी ग्लानि अवश्य करेंगे। अगर अधिकारी ही समय पर कार्यालय नहीं पहुँचते तो भला कार्यकर्त्ता क्यों पहुँचेंगे ?

इस प्रकार हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि जितना किसी मनुष्य का स्वयं पर नियन्त्रण होगा, उतना ही दूसरे भी अनुशासन में चलेंगे। अगर घर में माँ बाप का व्यवहार व चरित्र ही दोषपूर्ण होगा तो उनके शब्दों में इतनी शक्ति ही कहाँ होगी जो बच्चे उनकी बातें सुनकर चरित्रवान बनें। अतः यह स्पष्ट है कि आत्म-अनुशासन, आत्मिक स्वरूप में स्थित होने से ही आता है। जितना जितना आत्मा के सत्य स्वरूप का ज्ञान होता जाएगा व अभ्यास द्वारा हम उसमें स्थित होते जाएँगे, मनोबल व सन्तुलन उतना ही बढ़ता जाएगा और हम ठीक निर्णय ले सकेंगे और सफ़ल प्रशासक बन जाएँगे।

□

(पृष्ठ १६ का शेष)

उद्योग, युवा और योग

का पिता हूँ। अकर्ता, अभोक्ता और अविनाशी होने से ही सदा मुक्तेश्वर हूँ; मेरा स्वरूप ज्योतिबिन्दु स्वरूप है। मैं ही परम धाम निवासी, सर्वगुणों का सागर और दाता हूँ।"[२] ऐसे परमपिता परमात्मा की स्नेहयुक्त याद ही—स्मृति ही योग है। आत्मा का परमात्मा से सम्पर्क जोड़ना, मिलन मनाना ही राजयोग है। दृष्टा और दृश्य के बीच प्रकाश शक्ति से सम्पर्क बनता है। विमान चालक और हवाईअड्डे के बीच वायरलेस से सम्पर्क जुटता है, वैसे ही आत्मा का सम्पर्क परमात्मा के साथ मन और बुद्धि से जुटता है। सर्व संबंधों से परमात्मा की याद कर सर्व संबंधों की रसना प्राप्त करने वाला राजयोगी है, वही ईश्वरीय याद में अपने श्रेष्ठ कर्मों का अर्घ्य देने वाला सच्चा कर्मयोगी है। मनुष्य मात्र के कल्याण और सेवा के कर्मों में प्रवृत्त होने की कुशलता और कला ही सच्चा राजयोग है और यही राजयोग आज युवा क्या मानव मात्र के लिए इष्ट है। यही ज्ञान योग है, कर्मयोग है, बुद्धियोग है तथा भक्तियोग है, जो प्रत्येक के कर्मों में श्रेष्ठता लाकर श्रेष्ठ देवोपम जीवन का अधिकारी बनाता है।

२. ज्ञानामृत :-मानव का भविष्य अंक, पृष्ठ २१

(पृष्ठ १८ का शेष)

क्या मनुष्य को अपने भोजन के लिए हिंसा का अधिकार है ?

व्यक्तित्व को कहा जाए फिर पौधों में जीवन नहीं है क्योंकि पौधों में वह आध्यात्मिक सत्ता नहीं जो कि जीवधारी के मरने के पश्चात् भी रहती है। अतः शाकाहारी या फलाहारी होने में उनका मरना या वध करने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। इसके अलावा मनुष्य भूमि जोतता और उसमें बीज बोता है और जब पेड़ बड़ा हो जाता है तब उसकी हर शाखा फलों से झुक जाती ह, जिसका अभिप्रायः है कि इनका जीवन पूरा हो चुका है।

इसके अतिरिक्त पौधों में न तो पशुओं की भांति दिमाग होता है और न ही उनकी तरह पौधों में भावुकता और चेतनता होती है। उनमें केवल उत्पत्ति सम्बन्धी या रासायनिक याद (Chemical Memory) और जीवन कोमलता, प्रवाहक शक्ति या संवाहक शक्ति होती है। इसलिए इसमें दर्द उठने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। हालांकि मनुष्य और पशुओं के नकारात्मक कंपन पौधों की वृद्धि पर बुरा असर डालते हैं। उनमें वनस्पतिक द्रव्य होता है जिस पर जीवित प्राणियों के मानसिक तरंगों का असर पड़ता है। पशुओं की हिंसा के दर्द को फलों के पेड़ों से तोड़ने या खेत से फसल काटने से तुलना नहीं जा सकती।

क्रमशः

बोकारों में ब्र. कु. दादी निर्मल शान्ता जी एक विशाल आध्यात्मिक कार्यक्रम में शिव बाबा का सन्देश देते हुए।

ब्र. कु. दादी चन्द्रमणि जी ओमशानित भवन, आबू में पधारे, इन्दौर से आए संचार विभाग के अधिकारियों के एक ग्रुप को ईश्वरीय सन्देश देते हुए

जालन्धर में भारत पाकिस्तान के मध्य हुए दुसरे क्रिकेट टेस्ट मैच के अवसर पर आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन नगर जैन सभा के कार्यकारी प्रधान लाला कस्तूरी लाल जी कर रहे हैं।

कोचीन में राजयोग शिविर का उद्घाटन करते हुए भ्राता जी. बाल गंगाधरन नायर, केरल उच्च न्यायालय के न्यायाधीश

टाटा नगर में नए सेवाकेन्द्र का उद्घाटन करते हुए पूर्वी क्षेत्रीय इन्चार्ज दादी निर्मल शान्ता जी।

धुलिया के समीप नरडाना में आध्यात्मिक प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर प्रवचन करती हुई ब्र. कु. मिनाक्षी बहन

शक्तिनगर, दिल्ली के समीप नीमड़ी गांव में आध्यात्मिक प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर भ्राता कुलानन्द भारती, मुख्य शिक्षा पार्षद सम्बोधन करते हुए।

हापुड में आध्यात्मिक मेले के अवसर पर निकाली गई शोभा यात्र का दृश्य।

गांधी नगर (गुजरात) सेवाकेन्द्र के द्वारा आयोजित प्रभुमिलन प्रदर्शनी का उद्घाटन स्वामी नारायण के स्वामी हरिकेशवदास जी कर रहे हैं।

ब्र .कु. अनुसुया, पटेल नगर-नई दिल्ली में आयोजित 'दिव्य दर्शन आध्यात्मिक' मेले में, भ्राता मेवाराम आर्या को चित्रों प समझाते हुए

अंजार सेवाकेन्द्र की ओर से आयोजित 'निबंध स्पर्धा' के परिणाम स्वरुप इनाम वितरण समारोह में भाषण करती ह नगर पालिका सदस्य बहन प्रेमलता भट्ट जी।

अमरेली सेवा केन्द्र के वार्षिक उत्सव के अवसर पर विश्व शान्ति सम्मेलन में भाषण देते हुए वहां के डी.एस.पी.।

कटक में आध्यात्मिक संग्रहालय में, 'दी प्रजातन्त्र' के सम्पादक को चित्रों समझाती हुई ब्र. कु. सुशीला जी।

विदेश से प्राप्त ईश्वरीय सेवा समाचार

"दादी जानकी जी पौलैण्ड में"

प्राप्त समाचार के अनुसार ईश्वरीय विश्व विद्यालय की अतिरिक्त प्रशासिका दादी जानकी जी ने कम्यूनिस्ट देश पोलैंड में आयोजित एक कानफ्रेन्स में भाग लिया। कानफ्रेन्स का प्रेजीडेन्ट दादी जानकी जी से मिलकर अति प्रसन्न हुआ और कहा कि आपके यहां पांव रखते ही ऐसी शान्ति हो गई है जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। भले हम भगवान को नहीं मानते हैं परन्तु "शान्ति दाता" कोई है यह तो मानना ही पड़ेगा। उसने दादी जी का आभार मानते हुए कहा कि इस कानफ्रेन्स की सफलता पर मुझे शक था लेकिन आपने यहां का वातावरण शान्तिमय बना दिया है इससे अवश्य सफलता मिलेगी। इसलिए हम आपके आभारी हैं। दादी जानकी जी ने उन्हें "ओमशान्ति" शब्द का अर्थ बताते हुए शान्ति-दाता बाप की पहचान दी। क्राइस्ट को मानने वाले रोमन कैथलिक लोगों का विशेष प्रश्न था—कि क्या आप हमें अपने धर्म में कनवर्ट करने आई हैं? क्राइस्ट के प्रति आपका क्या विचार है? क्या आप दूसरे धर्मों को बुरा समझती हैं? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए दादी जानकी जी ने कहा कि क्राइस्ट को हम बहुत मान देते हैं, उसने स्वयं को गाड का बच्चा समझा। सभी को लव का सन्देश दिया। धर्म के लिए इतना सहन किया, मेरे मन में उसके प्रति बहुत रिगार्ड है। हम किसी धर्म को बुरा नहीं समझते परन्तु हमारे अन्दर जो बुराई है उसे निकालने का प्रयास करना है। हम किसी को अपने धर्म में कनवर्ट करने नहीं आये हैं परन्तु शिवबाबा से मुझे जो प्यार मिला है, प्राप्ति हुई है, मेरी जिगरी इच्छा है कि अन्य सभी आत्माओं को भी वही प्राप्ति हो। दादीजी ने कुछ लोगों को ओमशान्ति का बैज दिया तथा प्रसाद खिलाया। जाते समय सभी ओमशान्ति कर रहे थे।

जापान : समाचार मिला है कि जापान के ओसाका नगर में २५ हठयोग के शिक्षकों को राजयोग की शिक्षा दी गई, उन्होंने तीन दिन तक राजयोग के सभी क्लासेज किय। सभी ने अमृतवेले से लेकर सारा दिन योग अभ्यास कर परमात्मा-अनुभूति की।

एशिया व उत्तरी अफ्रीका के "मानव विज्ञान" की ३१ वीं अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस में ब्रह्माकुमारी बहनों के प्रवचन हुए। जिसमें लगभग २००० विद्वानों व मुख्य व्यक्तियों ने भाग लिया। सभी को आत्मा, परमात्मा तथा योग पर समझाया गया। प्रिंस मिकासा टाकाहिरो को पीस चार्टर भी भेंट किया गया जो कि कांग्रेस के अध्यक्ष थे। जापान से समाचार मिला हैं कि वहां मुख्य व्यक्तियों को राखी बांधी गई जिसमें वहां के भारतीय राजदूत व एक बौद्धी भिक्षु मुख्य थे।

ब्रह्माकुमार निर्वैर जी दो दिन एडेलेड में

आस्ट्रेलिया : प्राप्त समाचार के अनुसार एडेलेड शहर में एक सभा को सम्बोधित करते हुए राजयोगी ब्रह्माकुमार निर्वैर जी ने कहा कि किसी भी क्षेत्र में आक्रमण होना डर की निशानी है, चाहे वह फुटबाल का खेल ही क्यों न हो। यह आदत मानव मन में जहर भरती है। भारत के एक अधिकारी का उदाहरण देते हुए आपने बताया कि एक व्यक्ति जो अपने कार्यकर्ताओं के प्रति बहुत ही क्रोधी व आक्रमक था। उसका स्टाफ उससे बहुत डरता था। उसने राजयोग सीखा तो उसका संपूर्ण दृष्टिकोण बदल गया। पहले तो

स्टाफ को इस परिवर्तन पर विश्वास नहीं हुआ परन्तु जब बहुत समय तक उनका डर समाप्त हो गया तो आफिस का कार्य बहुत सुन्दर रूप से चलने लगा। उन्होंने यह भी कहा कि कोई भी बुरी आदत अच्छी आदत द्वारा हटाई जा सकती है। योग द्वारा आन्तरिक शान्ति जमा की सकती है जो अन्त में एक सुनहरे युग के रूप में सामने आयेगी। जो लोग निःशस्त्रीकरण द्वारा विश्व शान्ति खोज रहे हैं वे स्वयं ही इसमें उलझे हुए हैं क्योंकि मिसाइल्स स्वयं ही तो नहीं चलते इनको हटाने से काम नहीं चलेगा बल्कि सत्ताधारी लोगों को आन्तरिक शान्ति की आवश्यकता है।"

मलेशिया : समाचार मिला है कि ब्रह्माकुमार निर्वैर जी के मलेशिया पहुंचने से अनेक सेवायें हुई हैं। वहाँ के

मलाया-विश्व विद्यालय में "अधिक उत्पादन के लिए मानसिक एकाग्रता" नामक विषय पर आपका प्रवचन चला। वहां के इन्डियन हाई कमिश्नर से भी आपकी मुलाकात हुई। उसके बाद नर्सिंग स्कूल में "आपसी सम्बन्धों में सुधार कैसे हो?" इस विषय पर लगभग १०० नर्स व उनके स्टाफ के समक्ष भाषण हुआ। और अन्त में योग अभ्यास कराया गया।

सिंगापुर में ब्रह्माकुमार निर्वैर जी

प्राप्त समाचार के अनुसार ब्रह्माकुमार निर्वैर जी 7 सितम्बर को सिंगापुर एयरपोर्ट पर जब पहुंचे तो वहां के भाई बहनों ने रूहानी मिलन मनाते उनका स्वागत किया। सेवाकेन्द्र पर भी स्वागत प्रोग्राम चला। 8 सितम्बर को आपने नियमित भाई बहनों का अनुभवयुक्त क्लास कराया। शाम को सिंगापुर के कुछ प्रतिष्ठित व्यक्तियों से आपकी मुलाकात हुई। 9 ता० मेलव्यू मैगजीन के एडीटर ने आधा घण्टा तक इन्टरव्यू लिया। दोपहर 12·30 बजे रोटरी क्लब आफ सिंगापुर में "व्यवसाय और मानसिक शक्ति" पर प्रवचन चला। शाम को भारतीय हाईकमिश्नर दास गुप्ता जी से आपकी व्यक्तिगत मुलाकात हुई। उन्हें ईश्वरीय विश्व विद्यालय की गति विधियों के बारे में जानकारी दी गई। इसी दिन मैरिन परेड कमेन्ट्री सेन्टर में "आन्तरिक शक्तियों को व्यक्त करने पर" बहुत सुन्दर प्रवचन किया। परिणाम स्वरूप वहां पर अभी 18 सितम्बर से 8 सप्ताह के लिए विशेष राजयोग की क्लासेज भी आरम्भ की गई है। सिंगापुर रेडियो के "थैंक्स गाड इट इज फ्राइडे" नामक कार्यक्रम में आधे घण्टे का लाइव इन्टरव्यू हुआ। इन्टरव्यू के पश्चात् कईयों ने प्रश्न पूछे, सन्तोषजनक उत्तर पाकर सभी बहुत प्रसन्न हुए। 10 ता० शाम को 5 से 7 बजे तक वहां के नेशनल परेड यूनियन कांग्रेस के आडीटोरियम में "मानसिक स्थिरता और उत्पादन" नामक विषय पर सेमीनार चला। जिसमें सिंगापुर के साइकालोजिस्ट डा० ताई फांग, सिंगापुर इन्टर रिलीजस आरगनाइजेशन के सेक्रेट्री भ्राता बहरम वकील, डा० वांग ने मोमबत्ती जलाते हुए सम्मेलन का उद्घाटन किया। तत्पश्चात निर्वैर जी ने अपने विचार प्रस्तुत किये उन्होंने बताया कि व्यवहारिक संसार में रहते हुए हर रोज प्रातः अपना बुद्धियोग सर्वगुणों के सागर परमात्मा के तरफ ले जाएं तो सारा दिन हम अपने काम को अच्छी तरह से कर सकते हैं। डा० ताई ने कहा कि उत्पादन के कार्य में यदि हम अपने मन को स्थिर करें तो अधिक संख्या में उत्पादन हो सकता है। और कार्य में भी कुशलता आ सकती है। इसके अतिरिक्त अन्य वक्ताओं ने भी अपने अपने विचार प्रस्तुत किये। इस कार्यक्रम के द्वारा 120 आत्माओं ने लाभ लिया। 10 ता० को सिंगापुर के मोरल एज्यूकेशन के डायरेक्टर भ्राता डा० वालचीवेट से भी विशेष मुलाकात हुई। 11 ता० आप सिंगापुर से कोलालमपुर के लिए रवाना हुए।

सिंगापुर के इन्टरनेशल बुक कम्पनीज के द्वारा आयोजित बुक फैस्टीवल में सिंगापुर सेवाकेन्द्र की ओर से एक स्टाल लगाया गया। यह फैस्टीवल सितम्बर 3 से 12 तक चला। जिसमें ईश्वरीय विश्व विद्यालय की सर्व पुस्तकें और ज्ञान के गीतों की कैसेट्स भी रखी गई। यह भी समाचार मिला है कि 17 और 24 सितम्बर को सेवाकेन्द्र पर वर्कशाप के कार्यक्रम रखे गये हैं। जिसमें काफी लोगों ने अपने नाम पहले से ही रजिस्टर कराये हैं। 7 सितम्बर को लाइन्स क्लब में भी योग और मानसिक शान्ति नामक विषय पर प्रवचन चला। हर शनिवार को टापप्यो गर्लस होम में भी योग के प्रवचन चलते हैं। काफी लड़कियां योग सीखने के लिए आती रहती हैं।

ग्याना : प्राप्त समाचार के अनुसार ज्ञानामृत तथा वर्ल्ड रिन्युअल के मुख्य सम्पादक ब्रह्माकुमार जगदीश चन्द जी द्वारा विदेशों में अनेक ईश्वरीय सेवायें हो रहीं हैं। ग्याना के प्रेजीडेन्ट, प्राइममिनिस्टर, वाइस प्रेजीडेन्ट, विशप, मेयर तथा अन्य कई प्रतिष्ठित व्यक्तियों से आपकी व्यक्तिगत मुलाकात हुई। आपने अपनी इस मुलाकात के दौरान सभी को विद्यालय की गतिविधियों की जानकारी देते हुए आबू कानफ्रेन्स से भी अवगत कराया था। इसके पूर्व रक्षाबन्धन के अवसर पर इन सभी को बहनों ने पवित्रता की सूचक राखी बांधी थी। नियमित विद्यार्थियों को जगदीश भाई ने अपने 'सत्यता की खोज' का बहुत सुन्दर अनुभव सुनाया। नेशनल कलचरल सेन्टर में आयोजित एक सार्वजनिक कार्यक्रम में "नवयुग निर्माण करने में व्यक्तिगत योगदान" नामक विषय पर एक घण्टे तक प्रवचन किया। मोहनी बहन ने देश के प्रति सन्देश दिया। "सच्ची गीता" पर भी जगदीश भाई ने अपने विचार व्यक्त किये। सूरीनाम सेवाकेन्द्र से भी समाचार मिला है कि सूरीनाम में आपका टी. वी. इन्टरव्यु हुआ। जिसमें काफी प्रश्न उत्तर के पश्चात् देश के प्रति आपने अपने सन्देश में कहा कि हम सब आत्मा रूप में एक पिता के बच्चे भाई-भाई हैं, हमें आपस में बहुत प्यार से रहना चाहिए। वहां के बड़े होटल टोगरिका में पब्लिक प्रोग्राम हुआ जिसमें आपने अपने आध्यात्मिक जीवन के

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

सत्य का करिश्मा

—ले० ब्र० कु० व्ही० जे० बराडपांडे, बिलासपुर, म०प्र०

पात्र :

१. ब्रह्माकुमारी निर्मोही जी। आयु ५५ वर्ष
२. ब्रह्माकुमार भाई मोहन। आयु ३० वर्ष।
३. पुत्रशोक से दुखी महिला मायादेवी। आयु २५ वर्ष।
४. अन्य ब्रह्माकुमार भाई-बहन।

दृश्य प्रथम

ब्रह्माकुमारी आश्रम। आश्रम में मंच पर ब्रह्माकुमारी निर्मोही जी बैठी हैं और सामने बैठे भाई बहिनों को शिव बाबा की ज्ञान मुरली पढ़कर सुना रही हैं।

"वत्सो, देह को देखने से ही मनुष्य के मन में मोह पैदा होता है इसलिए स्वयं को आत्मा निश्चय करो तो मोह मिटेगा। दैहिक दृष्टि से देखने वाले मनुष्य का दैहिक बच्चों में ममत्व उत्पन्न होता है। मनुष्य पहले स्वयं को देह मानता है फिर इसी देह द्वारा उसने जो बच्चे पैदा किए उन्हें अपना बच्चा मानता है जिससे उसमें मोह और ममता पक्की हो जाती है। मनुष्य का दूसरे के हाड मांस में जो मोह है वह ईश्वर के प्रति द्रोह है। मोह का विकार उसे मरने के समय भी तंग करता है। जन्म मरण से होने वाले सब दुखों का मुख्य कारण मोह है। इसलिए नष्टो मोहा स्मृति लब्धा बनना है।

दृश्य द्वितीय

इतने में आश्रम के बाहर कोलाहल सुनाई पड़ता है। एक स्त्री मृत बालक को चिपटाये आश्रम की तरफ चली जाती है। उसे ब्रह्माकुमार भाई बहिन रोक रहे हैं पर वह मानती नहीं है।

निर्मोही जी : उच्च स्वर से बोलती है, कैसा कोलाहल है ?

ब्र० कु० मोहन : एक स्त्री मृत बालक को लेकर आ रही है। न मालूम मुर्दे को लाकर क्या करेगी। अज्ञानी ठहरी।

निर्मोही जी : उसे रोक क्यों रखा है ? आने दो।

मोहन : मुर्दे को भी लाने दें।

निर्मोही जी : मुर्दे में उसका मोह है तो ले आने दो।

दृश्य तृतीय

(माया देवी अपने बालक की लाश भुजाओं में भरे आश्रम के अंदर प्रवेश करती है। उसके वस्त्र अस्त-व्यस्त हैं, बाल बिखरे हैं, मुखकान्ति विकृत है)।

मायादेवी : (रोते हुए) मैं गरीबिन बच्चे को दवा न दे सकी। उपचार नहीं कर सकी। मेरे आंखों का तारा औषधि बिना इस दशा को पहुंचा। कोई इसे बचा लो। दुखिया पर दया करो।

निर्मोही जी : किसको औषधि दिलाती हो बहिन ?

मायादेवी : अपने बच्चे को। अपने इस लाल को (मृत बच्चे का मुंह चूमती है)।

निर्मोही जी : इस शरीर में अब प्राण नहीं रहे हैं। प्राण बिना शरीर मिट्टी होता है। तुम्हारा बच्चा यह मृत शरीर नहीं है।

माया देवी : यह मिट्टी है ? मेरा बच्चा नहीं है ?

निर्मोही जी : हां यही बात है। यही सत्य है। मिट्टी के लिए वृथा मोह करने से क्या लाभ होगा ?

मायादेवी : बहिन जी, मैं विनय करती हूं। माता की दृष्टि से एक बार इस बच्चे के शरीर को देखो। फिर कहो ये मिट्टी है।

निर्मोही जी : बहिन, इस दुनिया में सत्य को सत्य माने बिना निस्तार नहीं है।

मायादेवी : मैं शान्त कैसे रहूं ? मेरा बच्चा हाय; यह सांस भी नहीं लेता। हिलता डुलता भी नहीं।

निर्मोही जी : बहिन, यह मृत शरीर कैसे हिलेगा डुलेगा। इस पांच तत्व के शरीर को हिलाने डुलाने वाली जो चैतन्य आत्मा है, जो प्राण है वह तो इस शरीर को छोड़ चुका है। यह तो केवल जड़ शरीर है। क्या तुम इस बालक को जीवित देखना चाहती हो ?

मायादेवी : देवीजी, आप भी ऐसा पूछती हैं, कौन माँ होगी जो अपने बच्चे को हंसता खेलता न देखना चाहे। मां का दिल आप क्या समझेंगी।

निर्मोही जी : यह ठीक है। परन्तु तब माताएं तभी तक बच्चे से मोह करती हैं जब तक वह जीवित है। मर जाने पर तो कोई उसे चिपटाये नहीं फिरती।

मायादेवी : परन्तु मेरा दिल नहीं मानता बहिन।

निर्मोही जी : अलौकिक बात चाहती हो तुम ?

मायादेवी : आपकी बड़ी प्रशंसा सुनकर मैं आशा लेकर आई हूं। सुना है यहां जादू होता है। जादू चलाओ तो बच्चा जी उठे।

निर्मोही जी : दुनिया के आदि से अन्त तक जो नहीं हुआ वह तुम चाहती हो। अच्छा तुम एक काम करो।

माया देवी : आज्ञा हो बहिनजी। इस बच्चे के लिए मैं क्या नहीं कर सकूंगी।

निर्मोही जी : अच्छा तुम जाकर किसी ऐसे गृहस्थ के घर से नमक ले आओ जहां कोई मरा न हो।

मायादेवी : अभी लेकर आती हूं। (वह दौड़कर जाती है)।

मोहन : बहिन जी नमक से क्या होने वाला है ? कुछ बात समझ में नहीं आई।

निर्मोही जी : भाई जी, अभी ठहरो, वह महिला शुद्ध सत्य को लेकर आवेगी। फिर देखना चमत्कार।

दृश्य चतुर्थ

(लोगों की भीड़ आश्रम के पास आकर जमा हो जाती है। लोग कई प्रकार की अटकलें लगा रहे हैं। कोई कह रहा है कि मरा हुआ आदमी कैसे जिन्दा होगा। ऐसा जादू तो आज तक हमने देखा नहीं। कोई कहता है कि क्या नमक खिलाने से कोई मरा हुआ जिन्दा होता है। कोई कह रहा है देखो तो क्या होता है)।

मोहन : (खड़े होकर हाथ ऊंचे करके कहता है) बैठ जाओ भाइयो, शान्ति रखो। (इतने में मायादेवी का आगमन)

निर्मोही जी : (गंभीर स्वर से) बहिन, आओ। मेरा ख्याल है अवश्य ही तुम नमक ले आई होगी।

माया देवी : (अपने दोनों खाली हाथ ऊपर उठाकर) नमक नहीं मिल सका, बहिन जी।

निर्मोही जी : अरे, इतने बड़े नगर में तुम एक मुट्ठी नमक भी नहीं ला सकी।

माया देवी : (निराशा भाव से) नहीं ला सकी, बहिन जी। क्योंकि कोई ऐसा घर नहीं मिला जहाँ नमक मिल सकता। नमक बहुत है। हर घर में है परन्तु मृत्यु से अछूता एक भी घर नहीं मिला। मृत्यु सभी घरों में झाँक चुकी है।

निर्मोही जी : तब फिर इस बालक का क्या होगा ?

माया देवी : क्या होगा ! जिस शरीर की मृत्यु अनिवार्य है। उसका क्या हो सकता है। उसके लिए शोक करना वृथा मालूम होता है।

निर्मोही जी : अच्छा तो इतना समझ गई तुम। अब इतना और समझ लो कि चैतन्य अविनाशी आत्मा विनाशी जड़ शरीर से अलग है। जड़ को चलाने वाला चैतन्य आत्मा होता है। आत्मा ही सत्य है। वास्तव में तुम्हारे बच्चे की आत्मा ने अपना जड़ शरीर छोड़ दिया है और दूसरा शरीर धारण कर लिया है अर्थात् वह चैतन्य आत्मा जिन्दा है। मरा है केवल उस आत्मा का शरीर। तुम्हें इस पांच तत्वों के जड़ शरीर से मोह था। तुमने इस शरीर को देखा। उस शरीर में रहने वाली आत्मा को नहीं देखा। इस सत्य को न जानने के कारण ही तुम्हें दुख हो रहा है।

मायादेवी : बहिन जी, धन्य हो। आपके ज्ञान में कितनी शक्ति है। आपके ज्ञान से मुझे आलोक मिल गया। शक्ति मिल गई। मुझे प्रकाश मिल गया।

निर्मोही जी : अब तो तुम्हें दुःख नहीं है।

माया देवी : सत्य मालूम होने से मेरा दुख दूर हो गया। मैं कितनी मूर्ख थी कि इस जड़ शरीर में मेरा मोह था और उसके लिए मैं दुखी बनी हुई थी। क्यों न मैं उस आत्मा का अभिनंदन करूं जो नित्य है, सत्य है, अविनाशी है।

निर्मोही जी : बहिन, यह ज्ञान मेरा नहीं है। इस ज्ञान को देने वाले परमपिता परमात्मा हैं जो इस दुनिया के दुख को दूर करने के लिए, धर्म की स्थापना करने के लिए परमधाम से इस पृथ्वी पर आये हैं। उस अमरनाथ, अमृत को देने वाले परमपिता का ज्ञान प्राप्त कर अमरत्व हासिल करो और इक्कीस जन्मों के लिए अखंड सुख शान्ति प्राप्त करो। वह हमारा बाप है। वह हमारा परमपिता है और सुख शान्ति का वरसा देने के लिए आया है। उससे यह वरसा प्राप्त करो।

(शेष पृष्ठ २७ पर)

उदित हो रहा नव अरुण

ब्र०कु० सूरज प्रकाश, सहारनपुर

परमधाम से आये हैं शिव अपने बच्चों की पुकार सुन।
भारत के इस भाग्य गगन पर उदित हो रहा नव अरुण ।।

यमुना के कंठे पर होगा श्री कृष्ण का स्वर्णिम भवन
रास रचाते गोप-गोपियां होकर के मस्त मगन
मौसम खुशगवार, बसन्त बहार, झरनों की फुहार मंद-२ पवन
खाने को होगें मेवा-मिठाई, छत्तीस प्रकार के व्यंजन
सोच-२ कर तन रोमांचित, मन में मीठी सी सिहरन
भारत के इस भाग्य गगन पर उदित हो रहा नव अरुण

होना सकल जहान में लक्ष्मी नारायण का राज
अपना प्यारा भारत होगा विश्व का सरताज
होगा मुदित सकल समाज, न खतरे में किसी की लाज
न होंगे कंस-दुःशासन न अबलाओं का करुण क्रन्दन
न होगी कोई सीता चोरी, न द्रोपदी का चीर हरण
भारत के इस भाग्य गगन पर उदित हो रहा नव अरुण

न कोई गम, सब बेगम, बजेगी प्यार की सरगम
राग-द्वेष और भेदभाव का हो जायेगा नाम खत्म
बहेगी प्यार की गंगा होगी न कहीं नफरत व जलन
खुशी के नगमें गायेंगे सब, सर्व होगा चैनो-अमन
होंगे देवी देवता निर्विकारी सौलह कला सम्पूर्ण
भारत के इस भग्य गगन पर उदित हो रहा नव अरुण

कुटिल, कंटीले, कर्कश कलि का हो जायेगा नाश
जगमग-२ करे रात दिन, धरती और आकाश
नित नुतन आलोक जगे हो घर-२ में उजयारा भाई
पूरा देश बनेगा मधुबन बजेगी सुख की शहनाई
झूम उठेगी ये वसुधा और नाच उठेगा गगन
भारत के इस भाग्य गगन पर उदित हो रहा नव अरुण

देवी देवता धर्म की ध्वजा, लहराएगी अविराम
शब्द कोष तक से मिट जायेगा निर्धनता का नाम
नहीं दीनता, नहीं हीनता नहीं कहीं कंगाली होगी
हर घर आँगन मुस्काएगा अब सच्ची दीवाली होगी
खुशियों के दीप जलेगें घर-२ होगा मंगलाचरण
भारत के इस भाग्य गगन पर उदित हो रहा नव अरुण

सत्य का करिश्मा

(पृष्ठ २६ का शेष)

माया देवी : बहिन जी मुझे शक्ति दें। मुझे दृष्टि दें। मैं परमपिता परमात्मा की शरण लेती हूं।

निर्मोही जी : उस बहिन को दृष्टि देती हैं और बोलती है कि कल से मैं तुम्हें पांच दिन तक ईश्वरीय ज्ञान दूंगी। कल से जरूर आना।

माया देवी : जरूर आऊंगी बहिन जी। (ऐसा कहकर वह चली जाती है।)

(परदा गिरता है)

"समय"

ब्र० कु० राजेन्द्र कुमार, उज्जैन

"क" तीव्र रफ्तार से चला जा रहा था, उसका लक्ष्य स्टेशन था। वह बार-बार अपनी कलाई पर बंधी घड़ी पर निगाहें डालता और उसी अनुसार अपने पैरों को गति देता जा रहा था। वह स्टेशन पहुंचा लेकिन ट्रेन जा चुकी थी और वह "समय" पर नहीं पहुंच पाया था।

"ख" ने वर्ष भर पढ़ाई नहीं की, परीक्षा के दिनों में भी उसने पढ़ाई पर ध्यान नहीं दिया। परीक्षा-फल आने पर वह अनुत्तीर्ण (फेल) घोषित हुआ। 'समय" पर पढ़ाई नहीं करने का नतीजा सामने था।

उपरोक्त उदाहरण प्रस्तुत करने का तात्पर्य केवल "समय" के महत्त्व को प्रदर्शित करना है। "समय" अपने आप में बहुत बलशाली है। कहा भी जाता है कि समय ही राजा को रंक और रंक को राजा बना देता है। "समय" को महत्व देने वाला सफल हो जाता है—महान बन जाता है और जो "समय" को महत्व नहीं देता, वह असफल हो जाता है—जीवन की दौड़ में पिछड़ जाता है। "समय" सोना है, यदि हमने उसका महत्व समझा है तो, वरना वह हमारे लिये बेकार है।

"समय" अमूल्य है, उसके एक-एक क्षण का मूल्यांकन विश्व की किसी भी वस्तु से नहीं किया जा सकता। अतः समय को व्यर्थ करना बहुत ही हानि-कारक है। "समय" व्यर्थ से हमारा तात्पर्य-संकल्प और विचारों से है। "समय" के महत्व को जानकर उसका सदुपयोग करना ही मानव की बुद्धिमत्ता है और जानते हुऐ भी "समय" का दुरूपयोग करना मानव की दानवता है।

"समय" पर किये गये कार्य ही फलदायी होते हैं अर्थात् कार्यों का महत्व अपने समय अनुसार ही होता है। यदि ग्रीष्म ऋतु में गर्म कपड़े पहनेंगे तो उसका परिणाम क्या होगा, आप स्वयं समझ सकते हैं। अतः कार्यों को "समय" पर सम्पादित करना ही हमारे लिये लाभदायक है।

"समय" के सिर पर आगे की ओर बाल होते हैं और पीछे की ओर बाल नहीं होते अर्थात "समय" को आगे (पहले) से पकड़ेंगे, तो वह पकड़ में आ जावेगा, लेकिन यदि "समय" की पीछे से (बाद में) पकड़ेंगे, तो वह पकड़ में नहीं आवेगा। क्योंकि पीछे बाल ही नहीं है। "समय" निकल जाने के पश्चात् तो केवल मात्र पश्चाताप ही शेष रह जाता है।

आज के मानव से यदि ज्ञान-योग सीखने की बात कही जाती है, तो प्रायः उसका यही जबाब होता है कि फुरसत नहीं है या कि समय नहीं है। लेकिन ऐसा कहते वक्त वह शायद यह भूल जाता है कि वर्तमान कलियुगी दुनिया में मृत्यु का कोई भरोसा नहीं, कभी भी शरीर छूट सकता है। ऐसी दशा में "काल करे सो आज कर, आज करे सो अब" की उक्ति के अनुसार अभी हमारे पास जो "समय" है, (जिसे कि हम परदर्शन या परचिन्तन की बातों में गंवाते हैं) उसका सदुपयोग अपने जीवन को आध्यात्मिकता से आच्छादित करने हेतू करना चाहिये।

वर्तमान में मानव "समय" का जो दुरूपयोग कर रहा है, उसका मूल कारण यह है कि वह वर्तमान "समय" को नहीं पहचान पा रहा है कि यह कौनसा "समय" चल रहा है। वास्तव में वर्तमान समय है—सर्व युगों में श्रेष्ठ संगमयुग का समय, परमपिता परमात्मा के अवतरण का समय। इस सर्वश्रेष्ठ संगमयुग के "समय" पर ही उस सर्वशक्ति-मान परमात्मा का अवतरण साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा के तन में हुआ है। यदि हम अपने जीवन का शेष (अमूल्य) समय परमात्मा की याद एवं सेवा में लगायेंगे, तो हमारा जीवन धन्य-धन्य हो सकता है। लेकिन यदि हम इस सर्वश्रेष्ठ संगमयुग में भी अपना "समय" व्यर्थ गंवाते रहे, तो हमारे वर्तमान एवं भविष्य का बेड़ा गर्क ही होना है और कुछ नहीं।

हम अपनी दिनचर्या में जो "समय" व्यर्थ या इधर-इधर (परदर्शन-परचिन्तन) की बातों में गंवाते हैं, उसको यथार्थ एवं श्रेष्ठ कार्यो में कैसे लगायें अर्थात् "समय" का सदुपयोग कैसे करें, इसका सहज एवं सुलभ मार्ग अपने अनेक सेवाकेन्द्रों के माध्यम से बता रहा है—"प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय"। तो आइये हम सभी इसके माध्यम से "समय के महत्व" को जानकर, "समय" का सदुपयोग कर समाज, देश एवं विश्व में नैतिक एवं आध्यात्मिक उत्थान के बीज बोएं।

□

आध्यात्मिक सेवा समाचार

ब्र० कु० सत्यनारायण, ब्र० कु० श्रीराम, कृष्णा नगर देहली द्वारा संकलित

बड़ौदा सेवाकेन्द्र की ओर से भीमनाथ मंदिर, पारीख माडल हाईस्कूल और वाड़ी रंगमहल में प्रभात फेरी के साथ विश्व नव निर्माण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। गुजरात बिजली बोर्ड में गणेश उत्सव के अवसर पर प्रवचन किया गया तथा प्रोजैक्टर शो भी दिखाया गया। दैनिक पत्र "बड़ौदा समचार" में "चैतन्य मूर्ति श्री गणपति" पर ब्र० कु० अनु का लेख भी प्रकाशित किया गया।

गोंदिया सेवाकेन्द्र की ओर से गणेश उत्सव के उपलक्ष में शिवगुण दर्शन प्रदर्शनी का आयोजन गोंदिया रेलवे-इन्सटीच्यूट के ग्राउंड में किया गया। प्रदर्शनी के पश्चात् प्रवचन तथा राजयोग शिविरों का भी आयोजन किया गया।

बेलगांव सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि बम्बई से डा० गिरीश पटेल जी के आगमन पर सर्व मेडिकल कालेज आयुर्वेदिक मेडिकल कालेज, होमियोपेथी कालेज, तथा कर्नाटक सरकार हैल्थ डिपार्टमैंट, ला कालेज तथा के० ई० वी० आदि स्थानों पर हर रोज चार-चार सार्वजनिक प्रवचन के कार्यक्रम आयोजित किए गए। शहर के आई० एम० ए० मैंबर्स तथा अन्य डाक्टर्स के लिए सैंटर पर ही "साइंटिफिक मीट आफ डाक्टर्स आन मेडिटेशन एज मेडिसीन" कार्यक्रम रखा गया।

बोकारो सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि दादी निर्मलशांता जी का वहां पहुंचने पर हार्दिक स्वागत किया गया। उन्हीं के द्वारा चास सेवाकेन्द्र का उद्घाटन किया गया। बोकारो में प्रवचन का कार्यक्रम भी रखा गया जिसमें मुख्य अतिथि भ्राता पी० डी० कपिला, बोकारो इस्पात नगर के सी० पी० एम० थे। विशाल जनसभा में प्रवचन के बाद कई पत्रकारों ने भी दादी निर्मलशांता जी से व्यक्तिगत मुलाकात की।

करनाल सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि नीलोखेड़ी कसबा में चरित्रनिर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई, जिसका उद्घाटन राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, नीलोखेड़ी के प्रिंसिपल महोदय द्वारा सम्पन्न हुआ। रात्रि को राजयोग फ़िल्म भी दिखाई गई।

पठानकोट सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि गत-मास दो स्थानों पर प्रदर्शनियां, ११ स्थानों पर प्रोजैक्टर शो तथा कई स्थानों पर प्रवचन के कार्यक्रम आयोजित किए गए। जिनके द्वारा अनेकानेक आत्माओं को शिवपिता का दिव्य संदेश मिला।

अहमदाबाद सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि जैन तेरापंथ द्वारा आयोजित प्रवचन सप्ताह में, गुजरात युवक केन्द्र द्वारा आयोजित जैन पयुर्वण व्याख्यान माला की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर प्रवचन किए गए। अहमदाबाद में आयोजित आल इंडिया मेयर्स कानफ्रैंस में उपस्थित लगभग १५० मेयर्स तथा कमिश्नरों को युनिवर्सल पीस चार्टर व्यक्तिगत रूप से भेंट किया गया। इसके अतिरिक्त हैल्पींग हैंड एशोसिएशन को ओर से आयोजित 'दधीची अवार्ड' फंकशन में ब्रह्माकुमारी शारदा की मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया।

भावनगर सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि गत-मास दस विभिन्न स्थानों पर प्रवचन किए गए तथा युवा-वर्ग की सेवा के लिए 'युवालीडर्स' का विशेष स्नेह मिलन आयोजित किया गया।

सांगली सेवाकेन्द्र की ओर से अभयारण्य में सागरेश्वर नामक प्रसिद्ध शिवालय में तथा सांगली शहर में गणेश उत्सव के अवसर पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई। मिरज शहर में नगरपरिषद के हाल में पब्लिक प्रोग्राम रखा गया तथा सांगली शुगर फैक्टरी में प्रवचन कार्यक्रम रखा गया।

अमरेली (गुजरात) सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ हैं कि चक्करगढ़ तथा लाडी गांव में प्रोजैक्टर शो, अमरेली सब्जेल एवं आई० टी० आई० होस्टल में, नाना मावियाला, ठसा, लालावहर आदि गांवों में प्रवचन, खेतानी कन्या छात्रालय तथा तखड़ा गांव में सप्ताह कोर्स सरमड़ा गांव आध्यात्मिक प्रदर्शनी के विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। वी० आई० पीज का ब्रह्माभोजन भी रखा गया जिसमें ३५ वी० आई० पीज उपस्थित हुए। सेवाकेन्द्र के वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में 'विश्वशान्ति सम्मेलन' का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन जिला पुलिस अधिकारी जी ने किया।

पटना सेवाकेन्द्र की ओर से कृष्णा मेमोरियल हाल में श्री कृष्ण चेतना परिषद कमेटी के निमंत्रण पर दो दिवसीय चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त मंढौरा हाई स्कूल में तथा सारण मिल के जनरल मैनेजर के घर में चरित्र निर्माण प्रदर्शनी लगाई गई। नैतिक शिक्षा तथा चरित्र निर्माण की अलग-२ कलासेज भी लगाई गई, जिसके परिणाम स्वरूप अब वहां गीता पाठशाला चल रही है।

ब्यावर सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि वहां के 'तेजोमेले' में स्टाल लेकर आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई, जिसके द्वारा लाखों लोगों को ईश्वरीय संदेश मिला।

अयोध्या उपसेवा केन्द्र की ओर से दर्शननगर में 'सूर्य-कुण्ड' मेला के अवसर पर राजयोग प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसके द्वारा हजारों नर-नारियों ने प्रदर्शनी से लाभ उठाया।

बापूनगर (अहमदाबाद) सेवाकेन्द्र की ओर से कालुपुर विस्तार में दो दिन के लिए चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी तथा चैतन्य देवियों की झांकी का आयोजन किया गया, जिनसे अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया।

रामपुर सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि बरेली सेवाकेन्द्र की ओर से त्रिदिवसीय प्रदर्शनी एवं राजयोग शिविर का आयोजन किया गया जिससे लगभग २००० आत्माओं ने लाभ उठाया, जिसके परिणाण स्वरूप यहां सेवा-केन्द्र की स्थापना की गई।

कासगंज सेवाकेन्द्र की ओर से गणेश चौथ मेला-चन्दौसी में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई, जिसे १०.००० आत्माओं ने देखा।

श्यामनगर सेवाकेन्द्र की ओर से विश्वकर्मा पूजा के उपलक्ष्य में बैरकपुर पुलिस हैड क्वार्टर लाट बागान में विश्व नव निर्माण राजयोग प्रदर्शनी प्रोजैक्टर द्वारा दिखाई गई। गांव रोहता कालोनी बाजार में आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई।

हैदराबाद सेवाकेन्द्र की ओर से गांधी बाजार में तथा बेगम बाजार में आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं सतयुग की झांकी का आयोजन किया गया। गणेश विसर्जन के अवसर पर शहर में से निकाली गई। झांकियों में एक श्री राधे-श्री कृष्ण की सुन्दर झांकी सेवाकेन्द्र की ओर से भी निकाली गई, जिस पर चारों ओर प्रदर्शनी के बड़े-2 चित्र भी लगाए गए थे। इस झांकी को भी लाखों लोगों ने देखा।

हिसार सेवाकेन्द्र की ओर से विभिन्न स्थानों पर — कीर्ति माडल स्कूल, आर० एम० एस०, जवाहर नगर एवं राजगुरु मार्केट में प्रदर्शनी लगाई गई।

इन्दौर सेवाकेन्द्र द्वारा निर्माणाधीन "मिनी मधुबन" के परिसर में एक (मधु) वन-महोत्सव सप्ताह मनाया गया जिसमें नगर के अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा वृक्षारोपण किया गया।

सोलापुर सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि वहां से ४२ कि० मी० दूर बर्शी शहर में गणेश चतुर्थी के अवसर पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। दो स्थानों पर प्रोजैक्टर शो तथा प्रवचन भी किए गए। पंढरपुर तीर्थस्थान पर भारत के राष्ट्रपति भ्राता ज्ञानी जैलसिंह के पधारने पर ब्रह्माकुमारी बहिनों ने उनसे व्यक्तिगत मुलाकात की और श्री कृष्ण का चित्र एवं प्यो-रिटी पेपर भेंट किया। राष्ट्रपति के साथ अन्य मंत्रिगण तथा विशिष्ट व्यक्तियों को भी साहित्य भेंट किया गया। मोडनिव गांव के उपसेवा केन्द्र का प्रथम वार्षिक उत्सव भी बड़े धूमधाम से मनाया गया।

मलाड बम्बई सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि वहां पर "सुस्वास्थ्य प्रदर्शनी" का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन महाराष्ट्र राज्य के आरोग्य मंत्री श्रीमती डा० ललिता राव द्वारा सम्पन्न हुआ। समाज के हर वर्ग के नागरिकों ने प्रदर्शनी को बहुत रुचि पूर्वक देखा।

सहारनपुर सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि वहां पर हर वर्ष गोगापीट की याद में एक विशाल मेला गुघाल भरता है, जिसे देखने लाखों लोग आते हैं, इस वर्ष भी इस मेले में सेवाकेन्द्र की ओर से १० दिन के लिए 'चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का' आयोजन किया गया।

जींद सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि वार्षिक उत्सव के उपलक्ष्य में गुलजार दादी जी की अध्यक्षता में विशाल विश्व शान्ति सम्मेलन का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि प्रसिद्ध उद्योगपति सेठ गौरीशंकर थे। उन्हें ल० ना० का चित्र तथा साहित्य भेंट किया गया। भ्राता लक्ष्मण जी, भ्राता अमीर चन्द जी, चंडीगढ़ से अचल बहिन, दिल्ली से आशा बहिन सभी के प्रवचन बहुत प्रभाव-शाली थे।

बालेश्वर सेवाकेन्द्र की ओर से "मेडिटेशन एज मेडि-शियन" विषय पर डाक्टर्स का सम्मेलन बुलाया गया, जिसमें लगभग २५ डाक्टर शामिल हुए। सेवाकेन्द्र पर "एजुकेश-

निष्टस सम्मेलन" बुलाया गया जिसमें विषय था "शिक्षा में नैतिक मूल्यों तथा आध्यात्मिकता का महत्व"। इसके अतिरिक्त स्थानीय जेल में लगभग ३०० कैदियों व जेल अधिकारियों के समक्ष राजयोग का महत्व समझाया गया।

जालन्धर सेवाकेन्द्र की ओर से प्रति सप्ताह एक प्रदर्शनी करने के कार्यक्रम के अन्तर्गत गत मास करतारपुर आदमपुर, बस्ती बाबा खेल तथा पटेल चौक के निकट आध्यात्मिक प्रदर्शनियों का आयोजन किया गया। अंतिम प्रदर्शनी का आयोजन पाक-भारत के मध्य हुए दूसरे क्रिकेट टैस्ट मैच के दिनों में किया गया। इस प्रदर्शनी को पाकिस्तान से आये हुए अनेक आगन्तुकों तथा परम विदुषी जैन साध्वी सरिता जी ने बड़ी रुचिपूर्वक देखा तथा बाद में सेवाकेन्द्र पर पधारकर विचारों का आदान-प्रदान भी किया।

टाटानगर (बिहार) शहर से समाचार प्राप्त हुआ है कि दादी निर्मलशान्ता की अध्यक्षता में यहां पर एक नए सेवाकेन्द्र का उद्घाटन सम्पन्न हुआ। शहर के मुख्य हाल में आध्यात्मिक प्रदर्शनी तथा राजयोग शिविर का भी आयोजन किया गया जिससे हजारों आत्माओं ने ईश्वरीय संदेश प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त वीमेन्स कालेज में ४००० लड़कियों को शिव पिता का दिव्य संदेश देने के लिए प्रोजैक्टर शो तथा प्रवचन का कार्यक्रम भी आयोजित किया गया।

शक्ति नगर सेवाकेन्द्र से समाचार मिला है कि नजदीक में ही नीमड़ी गांव की धर्मशाला में ८ दिन के लिए आध्यात्मिक प्रदर्शनी तथा दिव्य झांकियों का आयोजन किया गया, जिसे कालोनी की उत्सुक जनता ने उमड़-उमड़ कर देखा। इसके अतिरिक्त "नारी निकेतन" में भी आध्यात्मिक प्रवचन के कार्यक्रम चले।

हापुड़—प्राप्त समाचार के अनुसार हापुड़ के इतिहास में पहली बार ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा चरित्र निर्माण आध्यात्मिक मेले का आयोजन १० दिन के लिए किया गया। जिसका उद्घाटन बंगाल बिहार जोन की इन्चार्ज दीदी निर्मलशान्ता जी की अध्यक्षता में एक प्रसिद्ध समाज सेवी कांग्रेस समिति के चेयरमैन (भूतपूर्व) भ्राता कैलाशचन्द्र मित्तल जी ने किया। आपने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि जो कुछ मैंने इस संस्था के बारे में सुना था और जो आज देख रहा हूं—जमीन आसमान का अन्तर है। इस संस्था में जाने वाले भाई बहिनों के जीवन से मैं प्रभावित हूं। मेले का दृश्य केन्द्र देवियों की चैतन्य झांकी सबको बहुत ही आकर्षित कर रही थी। ८०,००० आत्माओं ने मेले को देखकर आध्यात्मिक लाभ प्राप्त किया। मेले में आयोजित चार योग शिविर में ६०० आत्माओं ने योग शिविर तथा ४०० आत्माओं ने ज्ञान शिविर किया। मेले का समापन समारोह डी. एम. के. एन. सिंह जी द्वारा सम्पन्न हुआ। इस मेले को देखने के पश्चात सभी के मुख से एक ही आवाज आता था—सुना क्या था और देख क्या रहे हैं।

पटेल नगर-नई दिल्ली के इतिहास में पहली बार जन-जन को संदेश देने हेतु नवरात्रों के दिनों में दिव्य दर्शन आध्यात्मिक मेले का आयोजन किया गया। यह मेला सिर्फ़ 7 अक्तूबर से 12 अक्तूबर तक ईस्ट पटेल नगर मार्किट के पास पार्क में लगाया गया। जिसका उद्घाटन दिल्ली के मुख्य कार्यकारी पार्षद भ्राता जग प्रवेश चन्दर जी ने किया। भ्राता अमर जीत सिंह पाहवा जो पटेल नगर के नगर निगम पार्षद हैं आदरणीय अतिथि के रूप में पधारे।

उद्घाटन समारोह से पहले ईस्ट और वैस्ट पटेल नगर के मुख्य-2 क्षेत्रों में से एक विशाल शोभा यात्रा दो झांकियों सहित निकाली गई।

यहां के महानगर पार्षद भ्राता मेवाराम आर्य और निर्गुण बालक सत्संग मण्डल के प्रैजीडेन्ट ने भी मेले की बहुत ही प्रशंसा की और कहा कि ऐसे प्रोग्राम तो जहाँ-तहाँ होने चाहियें। मेले का मुख्य आकर्षण नव चैतन्य देवियों की झांकी थी। 150 आत्माओं ने योग शिविर किया जिसके फलस्वरूप 20 के करीब आत्माएं नित्य ज्ञान अमृत पान करने आ रही हैं।

मालवीय नगर, नई दिल्ली की ओर से कालका जी में सुप्रसिद्ध कालका मेले में शिव शक्ति आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया, यह प्रदर्शनी तीन दिन तक चली, इस प्रदर्शनी का विशेष आकर्षण था दुर्गादेवी व उसका खूब सूरत महल। यह प्रदर्शनी एकदम एकान्त स्थान पर थी, जिससे समझाने में बहुत अधिक सुविधा प्राप्त थी। मेले को देखने काफी दूर-2 से काफी संख्या में लोग आये थे, इतनी अधिक भीड़ से ऐसा प्रतीत होता था, मानो सारी दिल्ली यहां एक साथ ही एकत्रित हो गई हो।

मजलिस पार्क-दिल्ली सेवाकेन्द्र पर दशहरे के अवसर पर रावण का पुतला बनाया गया। हजारों लोगों ने 'सच्चा दशहरा कैसे मनाएं' समझकर अपने जीवन को विकार रहित बनाने की प्रेरणा ली।

विदेश से प्राप्त सेवा समाचार

(पृष्ठ २४ का शेष)

अनुभव सुनाये, जो वहां के लोगों को बहुत अच्छे लगे। यहां के अखबारों में भी प्रोग्राम की सूचना छपी जिसके फल स्वरूप अनेक प्रतिष्ठित व्यक्ति आपसे व्यक्तिगत मिलने के लिए आये।

"लोस एजिलिस" शहर में राजयोगी जगदीश चन्द्र जी के आगमन पर एक पब्लिक प्रोग्राम का आयोजन किया गया। जिसका विषय था "साइलेन्स पावर-सर्वोत्तम सुरक्षा" इस विषय पर जगदीश जी तथा यू० एन० ओ० में एन० जी० ओ० की प्रतिनिधि ब्रह्माकुमारी मोहिनी बहन ने वक्तव्य दिये।

मोहनी बहन की ब्राजील यात्रा

समाचार मिला है कि न्यूयार्क सेवाकेन्द्र की इन्चार्ज ब्र० कु० मोहिनी बहन के ब्राजील पहुंचने का समाचार रेडियो द्वारा प्रसारित करने के कारण इन्टरनेशन योग दिवस पर एक पार्क में 200 लोग एकत्रित हुए। मोहिनी बहन ने राजयोग पर प्रवचन दिया। पिरासिकाया नगर में भी एक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें मेयर ने अध्यक्ष पद ग्रहण किया। इस कार्यक्रम में 400 लोगों ने भाग लिया। विषय था—"शान्ति-वर्तमान की नीति" इस सम्बन्ध में 3 बड़े लेख भी अखबार में छपे। एक लाइब्रेरी में भी "कमल पुष्प समान जीवन" पर प्रवचन चला। जिसमें 160 आत्माओं ने भाग लिया। मुख्य व्यापार स्कूल में "सच्ची अहिंसा" पर भी आपका भाषण हुआ। वहीं पर "हठयोग स्कूल" की एक नई इमारत का भी उद्घाटन आपके द्वारा सम्पन्न हुआ।

यह भी समाचार मिला है कि दो भारतीय वैज्ञानिकों ने साप्ताहिक कोर्स सेवाकेन्द्र पर किया है। उनके साथ भी मोहनी बहन की मुलाकात हुई। सेवाकेन्द्र पर "ब्रह्मचर्य की शक्ति" नामक विषय पर आपने प्रवचन दिया। एक वी. आई. पी. होटल में भी प्रवचन का कार्यक्रम चला जिसमें टी. वी. के निर्देशक एवं अन्य 400 प्रतिष्ठित व्यक्ति उपस्थित थे। इसका समाचार मुख्य समाचार पत्रों में छपा तथा 20 मिनट का रेडियो इन्टरव्यु भी प्रसारित हुआ।

रमेश भाई और उषा बहन की यूरोप यात्रा

जर्मनी : प्राप्त समाचार के अनुसार बम्बई के भ्राता रमेश जी ओर उषा बहन 23 अगस्त को फ्रैंकफर्ट पहुंचे। उसी समय आयोजित एक कार्यक्रम में 'विविधता में एकता' नामक विषय पर भ्राता रमेश जी का प्रवचन चला। विश्व हिन्दू परिषद् के भी एक वक्ता वहां पर उपस्थित थे। कार्यक्रम में हिन्दू धर्म की रक्षा के बारे में काफी प्रश्न पूछे गये। उन्हें हिन्दू शब्द का भी अर्थ बताया। "साइलेन्स पावर" को माध्यम बनाकर वैज्ञानिकों को ईश्वरीय सन्देश देने पर भी आपसी विचार विमर्श हुए। कोलन शहर के एक बैलजियम हाउस में न्यायविदों के लिए आयोजित कार्यक्रम में "भौतिक नियम व आध्यत्मिक नियम" इस विषय पर प्रवचन चला। जर्मन रेडियो द्वारा 30 मिनट का हिन्दी व अंग्रेजी इन्टरव्यू भी रिकार्ड किया गया जो वहां के "विश्व सेवा" कार्यक्रम में प्रसारित किया जायेगा। पश्चिम जर्मन की राजधानी बोन में भी रमेश भाई का जाना हुआ वहां पर जर्मन स्थित भारतीय हाई कमिश्नर तथा रूस स्थित भारतीय हाई कमिश्नर को राखी बांधी गई। इसके बाद यहां के पहाड़ी नगर डिवोस में भी आप गये। वहां पर एक हाल में सम्मेलन का आयोजन था जिसमें भारत से भी कुछ विशिष्ट व्यक्ति आये हुए थे। भारत के भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री डा० कर्ण सिंह जी भी इस सम्मेलन में उपस्थित थे। यह कार्यक्रम प्रातः 9 बजे से रात्रि 9 बजे तक चला। इसमें लगभग 1000 भाई बहनों ने भाग लिया। सभी को ईश्वरीय सन्देश दिया गया। 15 भाई बहने सेवाकेन्द्र पर भी पधारे। सभी को माउण्ट आबू में आने का निमन्त्रण दिया गया।

हेमबर्ग : सेवाकेन्द्र की ओर से प्राप्त समाचार के अनुसार वहां की अनेक ईश्वरीय ज्ञान की प्यासी आत्माओं को प्रभु सन्देश सुनाने के लिए रमेश भाई और उषा बहन के स्वागत के उपलक्ष में युनिवर्सिटी का 800 वाला एक हाल लिया गया इस कार्यक्रम में इतने अधिक लोग आये जो 300 को हाल में प्रवेश नहीं मिल सका। बम्बई के रमेश भाई तथा डा० हाइडी के इन्टरव्यू वहां की प्रसिद्ध दो अखबारों "हेमबर्ग इवनिंग पेपर व पिक्चर्स न्यूजपेपर" में छपे। बड़ी सभा में भाषण तथा योग अभ्यास के कार्यक्रम बहुत ही आश्चर्यजनक रहे। सेवाकेन्द्र पर डाक्टर्स तथा मनोवैज्ञानिकों के लिए कार्यक्रम रखा गया। 400 लोगों ने 3 सम्मेलनों में भाग लेने तथा 7 दिन का कोर्स करने के लिए फार्म भरा।

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक, बी 9/19 कृष्णनगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ग्रन्थ भारती, शाहदरा दिल्ली-32 से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D, (E)—70